



MPEDA

समाचार पत्र

खंड VI संख्या 3 जून 2018

पृष्ठ 10

ब्लैक क्लैम
वितरण के लिए बिल्कुल तैयार है

पृष्ठ 19

'स्कवायर मेष कोड एंड निर्माण'
पर प्रशिक्षण

पृष्ठ 23

श्रिम्प कृषि को बेहतर बनाने के
उद्देश्य से एमपीईडीए का विस्तार

www.mpeda.gov.in





CPF-TURBO PROGRAM

The shrimp industry has seen major developments and tasted success over the years, And not only are we proud to be part of it, but also take pride in pioneering it. To ensure the success and profitability of the Indian Shrimp Industry, our highly determined team with committed Aquaculture specialists constantly provide the shrimp farmers with access to the latest and updated technology.



CPF-TURBO PROGRAM -
Pioneering Successful and Profitable Shrimp Aquaculture

विषय सूची

खंड. VI, संख्या. 3, जून 2018

कवर स्टोरी



10

ब्लैक क्लैम वितरण के लिए बिल्कुल तैयार है



03

समुद्री खाद्य निर्यात –
एक अवलोकन



19

'स्क्वायर मेष कोड एंड' के निर्माण
पर प्रशिक्षण



23

श्रिम्प कृषि को बेहतर बनाने के लक्ष्य
से एमपीईडीए का विस्तार



13

समुद्री मत्स्य लैंडिंग की
मुख्य विशेषताएँ



22

अक्वा फार्म नामांकन पर
पणधारियों की बैठक



26

एमपीईडीए द्वारा बहु-प्रजाति
जलकृषि कॉम्प्लेक्स का शुभारंभ

इस प्रकाशन के विद्वत्पूर्ण लेखों में व्यक्त विचार एमपीईडीए के विचार नहीं हैं, यह सिर्फ लेखक के विचार हैं।
इस प्रकाशन के विद्वत्पूर्ण लेखों के जानकारी की सटीकता की जिम्मेदारी लेखकों पर निहित है,
न ही एमपीईडीए और न ही संपादकीय गण की जिम्मेदारी है।



संपादक मंडल

श्री टी. डोला शंकर, आईओएफएस
निदेशक (वि.)

श्री बी. श्रीकुमार
सचिव

श्री पी. अनिल कुमार
संयुक्त निदेशक (अक्वा)

श्री के.वी. प्रेमदेव
उप निदेशक (विपणन संवर्धन)

डॉ. टी.आर. जिबिन कुमार
उप निदेशक (एमपीईडीए रत्नागिरी)

संपादक
श्री डॉ. एम.के. राम मोहन
संयुक्त निदेशक (वि.)

सह संपादक
श्रीमती के.एम. दिव्या मोहनन
वरिष्ठ लिपिक

संपादकीय समर्थन
बिबल्ड कॉर्पोरेट सोल्युशंस लिमिटेड
166, जवहर नगर, कडवन्ना,
कोच्ची, केरल, भारत- 682 020
फोन: 0484 2206666, 2205544
www.bworld.in, life@bworld.in

लेआउट
रोबी अंबाडी



www.mpeda.gov.in
support@mpeda.gov.in

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण की ओर से श्री बी श्रीकुमार, सचिव द्वारा मुद्रित और प्रकाशित (वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार) एमपीईडीए हाऊस, पनम्पिल्ली एवेन्यू, कोच्ची-682 036, फोन: +91 484 2311979

द्वारा प्रकाशित
एमपीईडीए हाऊस,
पनम्पिल्ली एवेन्यू,
कोच्ची-682 036

पर मुद्रित
प्रिंट एक्सप्रेस
44/1469 ए, अशोका रोड,
कलूर, कोच्ची - 682 017



डॉ. जयतिलक, भा.प्र.से.
अध्यक्ष

प्रिय मित्रों,

पाठकों को यह सूचित करने में मुझे अत्यंत खुशी हो रही है कि वर्ष 2017-18 के दौरान देश से समुद्री उत्पादों का निर्यात मात्रा और मूल्य के संदर्भ में नई ऊंचाइयों पर पहुंचा है। हमारे निर्यातकों ने 13,77,244 मीट्रिक टन समुद्री खाद्य को भेजा और देश के लिए 7.08 बिलियन डॉलर के विदेशी राजस्व अर्जित किया। वैश्विक समुद्री खाद्य व्यापार में हुए बाधाओं, जैसे कि प्रतियोगी राष्ट्रों से आपूर्ति में वृद्धि, वैश्विक श्रिम्प कीमतों में गिरावट, और यूरोपीय संघ और जापानी बाजारों में प्रतिजैविकी अवशेषों से संबंधित मुद्दों का सामना प्रशंसनीय है। यह हर्षजनक है कि एमपीईडीए निर्यात को सुविधाजनक बनाने में उचित और समय पर सहायता के साथ क्षेत्र का समर्थन कर पा रहा है। निर्यात के आँकड़ों का एक विस्तृत विवरण इस अंक के अंदरूनी पन्नों में प्रस्तुत किया गया है।

गत वर्ष की तुलना में वर्ष 2017 में देश के समुद्री मत्स्य उत्पादन में 5.6 प्रतिशत के पुनरुद्धार का संकेत दिखाया। सीएमएफआरआई द्वारा किए गए अनुमान देश में 3.83 मिलियन टन की कुल समुद्री मत्स्य लैंडिंग का संकेत देते हैं।

व्यापार में, भारत ने यूएसए से आर्टेमिया के सिस्ट के आयात पर 15% अधिक प्रशुल्क लगाने का फैसला किया है जो 4 अगस्त 2018 से प्रभावी होगी। इससे फार्म गेट पर श्रिम्प बीज की उत्पादन लागत बढ़ सकती है और श्रिम्प के कीमतों, और निर्यात बाजार को प्रभावित कर सकता है।

कृषकों और हैचरी संचालकों की सेवा हेतु कोच्ची के आसपास वल्लारपाडम में बहु प्रजाति जलकृषि कॉम्प्लेक्स उदघाटन लिए पूरी तरह तैयार है। 8.5 एकड़ में फैले इस सुविधा से व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण प्रजातियाँ जैसे, ब्लैक टाइगर श्रिम्प, एशियन सीबास, पोम्पानो, कोबिया, आनुवांशिक रूप से उन्नत तिलपिया (गिफ्ट), मड क्रैब आदि के बीज और फिंगरलिंग्स का उत्पादन होगा। मुझे उम्मीद है कि बहु प्रजाति जलकृषि कॉम्प्लेक्स द्वारा आपूर्ति की जाने वाली उच्च गुणवत्ता वाले ब्लैक टाइगर के बीज कृषकों के लिए एक वरदान होंगे और यह केरल और आसपास के राज्यों में श्रिम्प कृषि के कार्यों को पुनर्जीवित कर सकता है।

घरेलू बाजार में मत्स्य और श्रिम्प के संदूषण के बारे में रिपोर्ट आने के बाद चिंता हुई थी। एमपीईडीए ने इस मुद्दे को उच्च महत्व दिया है और समुद्री खाद्य निर्यातकों और कृषकों के साथ लगातार संपर्क में है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि निर्यात के साथ-साथ घरेलू बाजार श्रृंखला के लिए आपूर्ति की जाने वाली श्रिम्प और मत्स्य की सुरक्षा से समझौता न हो।

धन्यवाद।

समुद्री खाद्य निर्यात - एक अवलोकन

वित्तीय वर्ष 2017-18 के दौरान, भारत ने निर्यात की मात्रा और मूल्य में हर समय रिकॉर्ड आंकड़े स्थापित करके 7.08 बिलियन अमरीकी डालर मूल्य के 13,77,244 मीट्रिक टन सीफूड का निर्यात किया। गत वर्ष

की तरह यूएसए और दक्षिण पूर्व एशिया भारतीय समुद्री खाद्य पदार्थों के प्रमुख आयात बाजार बने रहे। प्रशीतित श्रिम्प उसके बाद प्रशीतित मत्स्य प्रमुख निर्यात मद के रूप में बने रहे। निर्यात सारांश रिपोर्ट तालिका 1 में दी गई हैं।

तालिका 1. वर्ष 2016-2017 की तुलना में वर्ष 2017 - 2018 के दौरान के समुद्री उत्पाद निर्यात प्रदर्शन			
निर्यात विवरण	2017-18	2016-17	वृद्धि %
मात्रा टनों में	13,77,244	11,34,948	21.35
मूल्य करोड़ रुपए में	45,106.89	37,870.90	19.11
यूएसडी मूल्य दशलक्ष में	7,081.55	5,777.61	22.57
इकाई मूल्य (यूएसडी/कि.ग्राम)	5.14	5.09	1.01

समग्र निर्यात की औसत इकाई मूल्य प्राप्ति पिछले साल इसी अवधि में 5.09 यूएस डॉलर की तुलना में समीक्षाधीन अवधि में प्रति किलोग्राम अमरीकी डालर 5.14 तक बढ़ गया है। हालांकि, प्रशीतित श्रिम्प की इकाई मूल्य वसूली में पिछले वर्ष की तुलना में प्रति किलोग्राम 0.01 यूएस डॉलर की गिरावट दर्शाई। (श्रिम्प ने मूल्य में कुल निर्यात के 68.46% का गठन किया)।

प्रमुख मद-वार निर्यात

प्रशीतित श्रिम्प मात्रा में 41.10% और यूएस डॉलर कमाई का 68.46 हिस्सा प्रतिशत के साथ मात्रा और मूल्य के संदर्भ में निर्यात की प्रमुख मद बनी रही, वर्ष के दौरान श्रिम्प निर्यात में मात्रा के रूप में 30.26% और अमरीकी डालर मूल्य में 30.10% तक वृद्धि हुई।

वर्ष 2017-18 के दौरान श्रिम्प का कुल निर्यात 4,848.19 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य के 5,65,980 मिलियन टन था। प्रशीतित श्रिम्प के लिए यूएसए सबसे बड़ा बाजार (2,25,946 मीट्रिक टन) बना रहा, इसके बाद दक्षिण पूर्व एशिया (1,59,145 मीट्रिक टन), यूरोपीय संघ (78,426 मीट्रिक टन), जापान (33,828 मीट्रिक टन), मध्य पूर्व के देशों (23,441 मीट्रिक टन), चीन (13,107 मीट्रिक टन) के अलावा अन्य (32,087 मीट्रिक टन) शामिल हैं।

वर्ष 2017-18 के दौरान वन्नामी श्रिम्प का निर्यात मात्रा में 22.02% और यूएस डॉलर मूल्य में 24.74% की वृद्धि के साथ 3,29,766 मी. टन से to 4,02,374 मी. टन तक बढ़ गया है। कुल वन्नामी श्रिम्प निर्यात का लगभग 52.84% यूएसए को किया गया, इसके बाद, दक्षिण पूर्व एशियाई देशों

में 21.03%, यूरोपीय संघ के लिए 11.31%, जापान को 4.67%, मध्य पूर्व में 3.00%, चीन को 1.35% और अन्य देशों को 5.80% तक निर्यात किया गया। मूल्य के संदर्भ में ब्लैक टाइगर श्रिम्प के लिए 43.18 की हिस्सा प्रतिशत के साथ जापान प्रमुख बाजार रहा और बाद में यूएस डॉलर में यूएसए (20.07%) और दक्षिण पूर्व एशिया (17.38%) है।

प्रशीतित मत्स्य जो दूसरी सबसे बड़ी निर्यात मद है, जिसने मात्रा में 25.64% और अमरीकी डालर की कमाई में 10.35% का निर्यात की है। यूएस डॉलर उपार्जन में प्रशीतित मत्स्य ने 9.03% की सकारात्मक वृद्धि दिखाई। हालांकि, इकाई मूल्य प्राप्ति वर्ष 2016-17 के 2.08 यूएस डॉलर/कि.ग्राम से वर्ष 2017-18 में 8.39% घट गई।

प्रशीतित स्क्वड निर्यात में मात्रा में 1.51% की वृद्धि हुई, लेकिन रुपए का मूल्य और अमरीकी डालर की उपार्जन में क्रमशः 4.79% और 0.93% की गिरावट आई। इकाई मूल्य प्राप्ति भी 2.40% तक घट गया।

ठंडी मर्दों के निर्यात ने मात्रा, रुपए मूल्य और यूएस डॉलर उपार्जन में क्रमशः 38.71%, 15.90% और 12.27% की गिरावट दर्शाई।

प्रशीतित कट्टलफिश निर्यात ने मात्रा में 9.26%, रुपए मूल्य में 21.19% और यूएस डॉलर में 26.35% की वृद्धि दिखाई। इकाई मूल्य प्राप्ति में भी 15.64% की उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

सूखी मर्दों ने मात्रा और रुपए के मूल्य में क्रमशः 45.73% और 19.57% की सकारात्मक वृद्धि दिखाई। लेकिन यूएस



**Freight Brokers
Global Services**

The world within reach.



Looking to Export to the U.S.?

HOW CAN FBGS HELP YOU?

Let our dedicated team with decades of experience assist you



**National Customs
Brokerage**



**Domestic and International
Air Freight**



**FCL/LCL
Ocean Freight**



**Full Service, Inter-Modal
& LTL Trucking**



**Cold/Dry/Bonded
Warehouse & Distribution**



**Full Service FDA Security &
Compliance Consulting**

First Time Importer Assistance

- Bond and Licensing Assistance
- "Green Ticket Applications" & Monitoring
- FDA/USDA/Fish & Wildlife - OGA Compliance
- National Cold Storage Network
- ADD/CVD Monitoring & Refunds
- Reduced Duty Rates

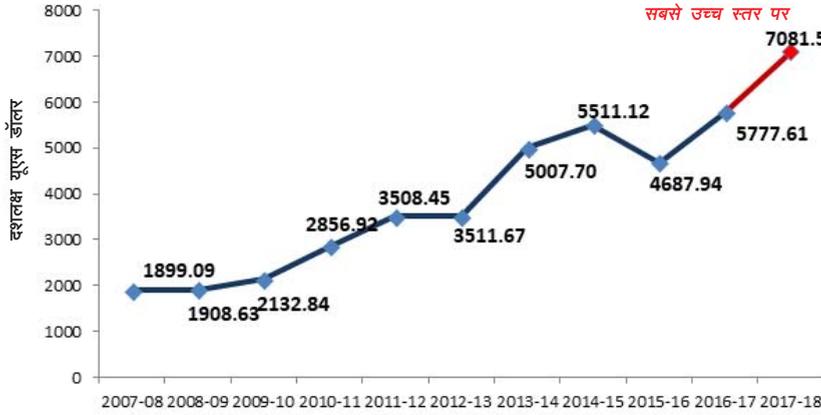
LET'S GET STARTED!

Call: +91 98478 02324

Email: ExportUSA@FreightBrokersGlobal.com

विपणन समाचार

चित्र 1. निर्यात प्रदर्शन : 2017-18 (यूएस डॉलर मूल्य में)



डॉलर में 18.14% की गिरावट आई। इकाई मूल्य प्राप्ति भी 43.83% तक कम हुए।

जीवित मर्दों के निर्यात मात्रा में 4.93% तक बढ़े; जबकि रुपए मूल्य और यूएस डॉलर उपार्जन में क्रमशः 29.14% और 25.63% की गिरावट हुई। यूनिट मूल्य प्राप्ति भी 29.12% कम हुआ है।

अन्य मर्दों के निर्यात ने मात्रा में, रुपए मूल्य और यूएस डॉलर उपार्जन में क्रमशः 21.97%, 30.32% और 35.58% की सकारात्मक वृद्धि दर्शाई। इकाई मूल्य प्राप्ति भी 11.16% तक बेहतर हुई है।

तालिका 2. मदवार निर्यात : 2017 - 2018

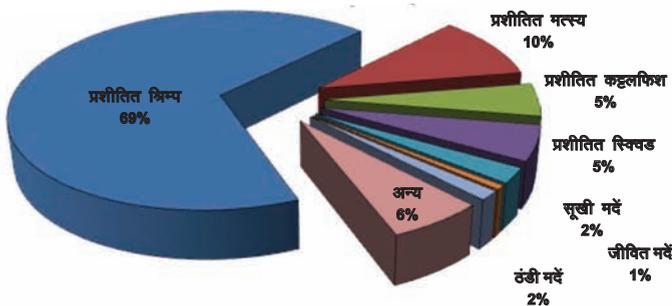
मा: मात्रा टनों में, मू: मूल्य करोड़ रुपए में, डॉ.दशलक्ष यूएस डॉलर में, यूवी डॉ:यूएसडी/कि.ग्रा.

मद		हिस्सा %	2017-18	2016-17	वृद्धि (%)
प्रशीतित श्रिम्प	मा:	41.10	5,65,980	4,34,486	30.26
	मू:	68.43	30,868.17	24,711.32	24.92
	डॉ	68.46	4,848.19	3,726.38	30.10
	यूएस डॉ.		8.57	8.58	-0.12
प्रशीतित मत्स्य	मा:	25.64	3,53,192	2,96,762	19.02
	मू:	10.36	4,674.03	4,460.90	4.78
	डॉ	10.35	733.17	672.47	9.03
	यूएस डॉ.		2.08	2.27	-8.39
प्रशीतित कट्टलफिश	मा:	5.02	69,183	63,320	9.26
	मू:	5.22	2,356.46	1,944.50	21.19
	डॉ	5.22	369.88	292.73	26.35
	यूएस डॉ.		5.35	4.62	15.64
प्रशीतित स्क्विड	मा:	7.32	1,00,845	99,348	1.51
	मू:	5.44	2,451.87	2,575.29	-4.79
	डॉ	5.44	385.01	388.64	-0.93
	यूएस डॉ.		3.82	3.91	-2.40

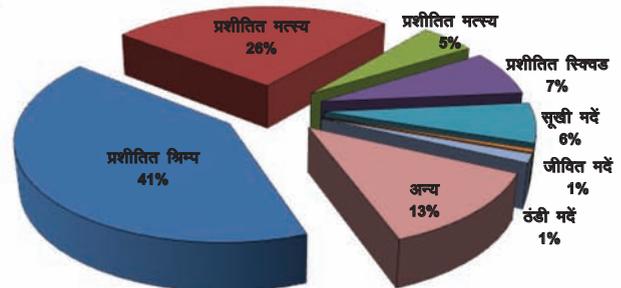
विपणन समाचार

सूखी मद	मा:	6.46	88,997	61,071	45.73
	मू:	2.31	1,042.37	871.74	19.57
	डॉ	2.31	163.53	199.77	-18.14
	यूएस डॉ.		1.84	3.27	-43.83
जीवित मद	मा:	0.51	7,034	6,703	4.93
	मू:	0.63	286.11	403.75	-29.14
	डॉ	0.64	45.41	61.05	-25.63
	यूएस डॉ.		6.46	9.11	-29.12
ठंडी मद	मा:	1.42	19,501	31,815	-38.71
	मू:	1.44	647.41	769.81	-15.90
	डॉ	1.44	101.78	116.02	-12.27
	यूएस डॉ.		5.22	3.65	43.13
अन्य	मा:	12.53	1,72,512	1,41,442	21.97
	मू:	6.16	2,780.48	2,133.59	30.32
	डॉ	6.14	434.58	320.54	35.58
	यूएस डॉ.		2.52	2.27	11.16
कुल	मा:	100.00	13,77,244	11,34,948	21.35
	मू:	100.00	45,106.89	37,870.90	19.11
	डॉ	100.00	7,081.55	5,777.61	22.57
	यूएस डॉ.		5.14	5.09	1.01

चित्र 2. निर्यात मूल्य में मद-वार हिस्सेदारी: 2017-18 (यूएस डॉलर)



चित्र 3. निर्यात मूल्य में मद-वार हिस्सेदारी: 2017-18 (मात्रा)



विपणन समाचार

बाजार-वार निर्यात

यूएस डॉलर मूल्य के संदर्भ में 32.76% के हिस्सेदारी के साथ यूएसए भारतीय समुद्री खाद्य का प्रमुख आयातक बना रहा। यूएसए ने वर्ष 2017-18 के दौरान भारत से 2,47,780 मीट्रिक टन समुद्री उत्पादों का आयात किया। यूएसए को किए गए निर्यात ने मात्रा, रुपए मूल्य और यूएस डॉलर मूल्य के संदर्भ में क्रमशः 31.37%, 28.63% और 33.97% की वृद्धि दर्ज की। यूएसडी मूल्य में 95.03% की हिस्सेदारी के साथ प्रशीतित श्रिम्प यूएसए के लिए निर्यात का प्रमुख मद बना रहा। यूएसएडी के निर्यात में वन्नामी श्रिम्प ने मात्रा 31.93% और यूएसडी के संदर्भ में 33.03% वृद्धि दिखाई। यूएसए को किए गए ब्लैक टाइगर श्रिम्प के निर्यात में मात्रा में 12.73% और यूएसडी मूल्य में 18.37% की कमी हुई है।

यूएसडी के संदर्भ में 31.59% की हिस्सेदारी के साथ दक्षिण पूर्व एशिया भारतीय समुद्री उत्पादों का दूसरा सबसे बड़ा बाजार बना रहा, इसके बाद क्रमशः यूरोपीय संघ (15.77%), जापान (6.29%), मध्य पूर्व के देश (4.10%), चीन (3.21%) और अन्य देश (6.28%) है। दक्षिण पूर्व एशिया को किए गए कुल निर्यात ने मात्रा में 27.20%, रुपए मूल्य में 24.33% और यूएस डॉलर कमाई में 29.45% की वृद्धि की।

वियतनाम यूएस डॉलर के संदर्भ में 79.29% की हिस्सेदारी के साथ भारतीय समुद्री उत्पादों के लिए प्रमुख दक्षिण पूर्व एशियाई बाजार है। इसके बाद क्रमशःथाईलैंड (11.63%), ताइवान (3.12%), मलेशिया (2.57%), सिंगापुर (1.68%), दक्षिण कोरिया (1.51%) और अन्य देश (0.20%) हैं। इनमें से, अकेले वियतनाम ने 4,13,518 मीट्रिक टन भारतीय समुद्री खाद्य मदों का आयात किया; यह मात्रा अमेरिका, जापान या चीन जैसे किसी भी अन्य व्यक्तिगत बाजारों की तुलना में बहुत अधिक है।

यूरोपीय संघ मात्रा में 13.82% की हिस्सेदारी के साथ भारतीय समुद्री उत्पाद के तीसरा सबसे बड़ा गंतव्य के रूप में जारी रहा। मात्रा में 41.21% और और 54.05% के यूएस डॉलर उपार्जन करके प्रशीतित श्रिम्प ईयू को प्रमुख निर्यात मद के रूप में जारी रहा। प्रशीतित श्रिम्प का निर्यात

मात्रा, रुपए और यूएस डॉलर के मूल्य के संदर्भ में क्रमशः 1.62%, 1.19% और 5.38% की वृद्धि की।

जापान यूएस डॉलर उपार्जन में 6.29% और मात्रा में 6.22% के हिस्सेदारी के साथ भारतीय समुद्री खाद्य के चौथे सर्वोच्च गंतव्य है। जापान में निर्यात मात्रा में 24.06%, रुपए रुपये के मूल्य में 8.58% और यूएस डॉलर के संदर्भ में 12.87% की वृद्धि हुई। जापान को किए गए कुल निर्यात में से प्रशीतित श्रिम्प मात्रा में 39.50% और यूएस डॉलर उपार्जन में 75.08% के साथ प्रमुख निर्यात मद के रूप में जारी रहा। जापान को किए गए प्रशीतित श्रिम्प निर्यात में मात्रा में 8.13% और यूएस डॉलर मूल्य में 9.63% की वृद्धि हुई। इस वर्ष जापान को ब्लैक टाइगर श्रिम्प के निर्यात में 13.87% की कमी के साथ मात्रा में 5,032 मीट्रिक टन से 5,842 मीट्रिक टन तक की अस्वीकार हुआ था। हालांकि, 10.65% की वृद्धि के साथ वर्ष 2016-17 के 12.30 यूएस डॉलर की तुलना में वर्ष 2017-18 के 13.72 यूएस डॉलर तक इकाई मूल्य बढ़ गया। यह मुख्य रूप से घटते उत्पादन के कारण बीटी श्रिम्प की कम आपूर्ति के कारण हुए उच्च मांग के कारण हुआ है। वन्नामी श्रिम्प का उत्पादन मात्रा 28.62% और यूएस डॉलर मूल्य में 28.48% तक सुधर गया।

चीनी बाजार में निर्यात में क्रमशः 9.37% और 12.47% की वृद्धि हुई है। रुपए का मूल्य भी 7.91% तक बढ़ा है। चीन को प्रशीतित वन्नामी श्रिम्प का निर्यात में मात्रा, रुपए मूल्य और यूएस डॉलर के संदर्भ में क्रमशः 22.43%, 19.09% और 24.04% तक वृद्धि हुई है।

मध्य पूर्व के निर्यात में मात्रा, रुपए मूल्य और यूएस डॉलर मूल्य के संदर्भ में क्रमशः 17.45%, 1.01% और 5.26% की सकारात्मक वृद्धि दिखाई है। अन्य देशों को किए गए निर्यात ने पिछले वर्ष की तुलना में मात्रा, रुपए मूल्य और यूएस डॉलर मूल्य के संदर्भ में क्रमशः 19.81%, 26.18% and 9.39% सकारात्मक वृद्धि दिखाई।

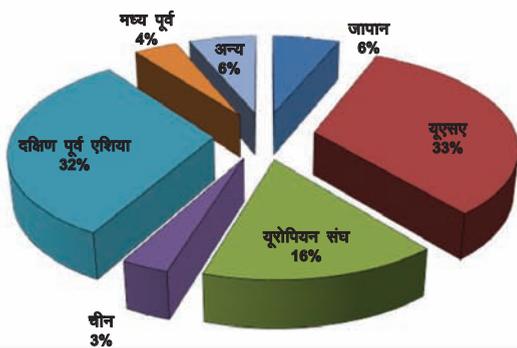
भारतीय समुद्री उत्पादों के प्रमुख बाजारों का विवरण तालिका 3 में दिया गया है।

तालिका 3. बाजार-वार निर्यात : 2017 - 2018					
मा: मात्रा टनों में, मू: मूल्य करोड़ रुपए में, डॉ: दशलक्ष यूएस डॉलर में					
बाजार	हिस्सा %		2017-18	2016-17	वृद्धि (%)
जापान	6.22	मा:	85,651	69,039	24.06
	6.31	मू:	2,846.30	2,621.37	8.58
	6.29	डॉ:	445.27	394.50	12.87

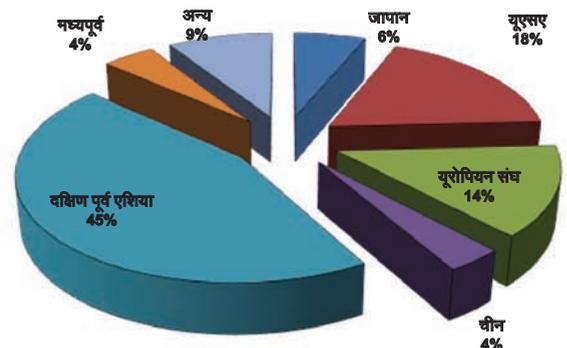
विपणन समाचार

यूएसए	17.99	मा:	2,47,780	1,88,617	31.37
	32.74	मू:	14,769.83	11,482.16	28.63
	32.76	डॉ:	2,320.05	1,731.81	33.97
यूरोपियन संघ	13.82	मा:	1,90,314	1,89,833	0.25
	15.78	मू:	7,115.96	6,892.19	3.25
	15.77	डॉ:	1,116.74	1,038.59	7.52
चीन	3.61	मा:	49,701	45,443	9.37
	3.21	मू:	1,448.03	1,341.94	7.91
	3.21	डॉ:	227.39	202.19	12.47
दक्षिण पूर्व एशिया	44.78	मा:	6,16,707	4,84,819	27.20
	31.59	मू:	14,250.26	11,461.83	24.33
	31.59	डॉ:	2,237.07	1,728.19	29.45
मध्य पूर्व	4.52	मा:	62,220	52,973	17.46
	4.10	मू:	1,849.10	1,830.58	1.01
	4.10	डॉ:	290.46	275.93	5.26
अन्य	9.07	मा:	1,24,871	1,04,224	19.81
	6.27	मू:	2,827.40	2,240.83	26.18
	6.28	डॉ:	444.57	406.40	9.39
कुल	100.00	मा:	13,77,244	11,34,948	21.35
	100.00	मू:	45,106.89	37,870.90	19.11
	100.00	डॉ:	7,081.55	5,777.61	22.57

चित्र 4. निर्यात मूल्य में बाज़ार-वार शेयर : 2017-18 (यूएस डॉलर)



चित्र 5. निर्यात मूल्य में बाज़ार-वार शेयर : 2017-18 (मात्रा)



विपणन समाचार

प्रमुख बंदरगाह-वार निर्यात

समुद्री उत्पादों का निर्यात 31 विभिन्न समुद्री/हवाई/भू बंदरगाहों के माध्यम से किया जाता है। समुद्री माल को संभालने वाला प्रमुख बन्दरगाह हैं, विजाग, कोच्ची, कोलकाता, पिपावाव,

कृष्णपट्टनम और जेएनपी। सभी बंदरगाहों से निर्यात में सुधार हुआ, हालांकि कोलकाता बंदरगाह ने नियंत्रित मात्रा में थोड़ी गिरावट दिखाई। प्रमुख बंदरगाह-वार निर्यात विवरण नीचे दिया गया है।

तालिका 4. बंदरगाह - वार निर्यात : 2017 - 2018					
मा: मात्रा टनों में, मू: मूल्य रुपए करोड़ में, डॉ: दशलक्ष यूएस डॉलर में					
बंदरगाह		हिस्सा %	2017-18	2016-17	वृद्धि (%)
विजाग	मा:	14.58	200779	159973	25.51
	मू:	25.37	11,442.39	9,294.31	23.11
	डॉ:	25.38	1,797.08	1,401.94	28.18
कोच्ची	मा:	12.79	176090	155989	12.89
	मू:	12.87	5,805.11	4,860.98	19.42
	डॉ:	12.87	911.71	733.24	24.34
कोलकाता	मा:	7.18	98861	104691	-5.57
	मू:	10.81	4,875.58	4,455.19	9.44
	डॉ:	10.81	765.65	705.35	8.55
पिपावाव	मा:	22.23	306181	232391	31.75
	मू:	10.81	4,876.20	4,217.45	15.62
	डॉ:	10.74	760.84	629.56	20.85
कृष्णपट्टनम	मा:	6.27	86420	62049	39.28
	मू:	10.58	4,773.83	3,701.63	28.97
	डॉ:	10.59	749.65	557.87	34.38
जे एन पी	मा:	12.91	177752	149914	18.57
	मू:	10.42	4,699.10	4,084.96	15.03
	डॉ:	10.45	740.10	615.93	20.16
तुत्तिकोरिन	मा:	3.75	51684	42026	22.98
	मू:	5.89	2,654.96	2,220.52	19.56
	डॉ:	5.89	417.09	334.77	24.59
चेन्नई	मा:	4.55	2,052.46	1,693.87	21.17
	मू:	4.56	322.88	255.50	26.37
	डॉ:	10.47	144235	126405	14.11
मंगलोर/आईसीडी	मा:	10.47	144235	126405	14.11
	मू:	3.98	1,793.41	1,584.08	13.21
	डॉ:	3.98	281.54	278.45	1.11
अन्य	मा:	6.30	86,798.21	64,207.52	35.18
	मू:	4.73	2,133.84	1,757.96	21.38
	डॉ:	4.73	335.01	265.01	26.41
कुल	मा:	100.00	1377244	1134949	21.35
	मू:	100.00	45,106.89	37,870.93	19.11
	डॉ:	100.00	7,081.54	5,777.62	22.57



ब्लैक क्लैम वितरण के लिए बिल्कुल तैयार है

निकिता गोपाल, जे पी जेम्स, के एच श्रीदेवी, जे बिन्दु, एस श्रीजित

आईसीएआर - केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, मत्स्यपुरी पी.ओ., विल्लिंगडन द्वीप,
कोचीन - 682 029

क्लैम, ओईस्टर और मसल्स आदि छिलकेदार मोलस्क हैं, जो एक तटवर्ती जल में पाए जाने वाले अवसादी जीव हैं। वे अपने जीवनकाल में बहुत कम चलते हैं, लेकिन वे कई जीवन की किस्मत बदल सकते हैं। कई मछुआरे समुदाय इन जीवों पर अपनी आजीविका बनाए रखते हैं।

क्लैम देश के कुल उत्पादन का लगभग 72.9% का योगदान देते हैं। वर्ष 2016 में देश से कुल क्लैम उत्पादन 64,105 मीट्रिक टन (सीएमएफआरआई, 2016) था। भारत के लगभग 73.8% क्लैम लैंडिंग ब्लैक, जिसका वैज्ञानिक नाम विलोरिता साइप्रिनोइड्स है, क्लैम का है। इसमें केरल के वेम्बनाड झील ने वर्ष 2016 के दौरान मत्स्यन में 81.7% का योगदान दिया (सीएमएफआरआई, 2016)। केरल की झीलों और ज्वार-मुहानीय से लिए गए अन्य महत्वपूर्ण क्लैम प्रजातियों में शॉर्ट नेक क्लैम (पपहिया मालाबारिका) और पीला क्लैम (मेरेट्रिक्स कास्टा) शामिल है।

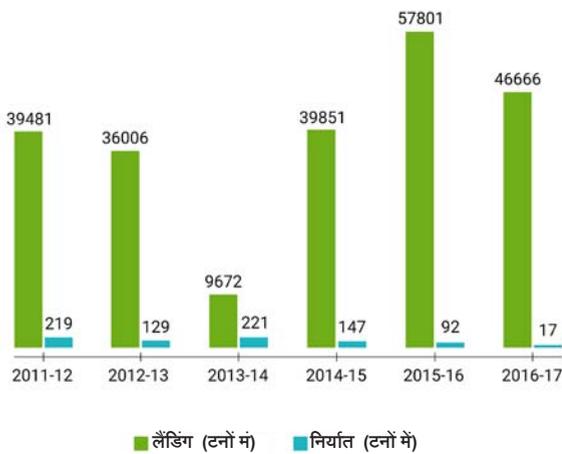
वर्तमान क्लैम विपणन

वर्ष 2016-17 के दौरान 10.67 लाख रुपए मूल्य के 721.88 टन येलो क्लैम ने अंतरराष्ट्रीय निर्यात के सर्वोच्च स्थान पर रहा (एमपीईडीए, व्यक्तिगत संचार, 2018)।

जापान और थाईलैंड में अंतराष्ट्रीय बाजारों को लक्षित करने वाले अधिकांश पीले क्लैम, कोल्लम, तिरुवनंतपुरम और कोषीकोड के कुछ प्रसंस्करण संयंत्रों से आए थे।

निर्यात के क्षेत्र में समान रूप से अच्छी क्षमता होने और बड़ी मात्रा में आने के बावजूद भी, ब्लैक क्लैम ने एक समान प्रभाव नहीं डाला (चित्र 1)। थाईलैंड को कोल्लम के एक प्रसंस्करण संयंत्र से 1.3 एमटी की मात्रा के ब्लैक क्लैम का निर्यात वर्ष 2016 में रिपोर्ट की गई थी। कोल्लम और एरणकुलम के कुछ प्रसंस्करण संयंत्रों ने प्रसंस्कृत ब्लॉक रूप में ब्लैक क्लैम मांस का निर्यात कर रहे थे।





चित्र 1. वर्ष 2011-2017 के दौरान किए गए लैंडिंग और निर्यात आँकड़े की तुलना

दिनांक स्रोत: एमपीईडीए, आईसीएआर-सीएमएफआरआई का प्रकाशन

क्लैम के लिए अंतर्राष्ट्रीय बाजार चीन, कोरिया, यूरोप और यूएसए जैसे देश हैं, जिनमें से चीन में अपने घरेलू खानपान उद्योग की मांग को पूरा करने के लिए द्विकपाटी कृषि भी है (डब्ल्यूएचओ, 2010)। कई देशों में द्विकपाटी के खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए नियामक मानक हैं और इन देशों की प्रसंस्करण इकाइयाँ इन मानकों का पालन करती हैं। भारत अब तक द्विकपाटी के बाजार पर कब्जा नहीं कर पाया है, मुख्य रूप से इसका कारण है, अपना ध्यान श्रिम्प और सेफालोपोड पर केन्द्रित किया गया है साथ ही इस संबंध में कोई खाद्य सुरक्षा अनुपालन मुद्दे नहीं हैं। अधिकांश विकासशील देशों ने भी द्विकपाटी कृषि की स्थापना नहीं की है, हालांकि यह संस्थागत समर्थन के माध्यम से स्थानीयकृत जेब में जाता है (मोहम्मद ईटी.अल. 2016)।

द्विकपाटी कृषि की फसल आमतौर पर प्राकृतिक जल से की जाती है और इसका उपभोग स्थानीय स्तर पर होता है। उपभोग के लिए क्लैम मांस में कोलीफॉर्म की गणना जीवित स्थिति में 230 ई. कोली प्रति 100 ग्राम की स्वीकार्य सीमा से ऊपर नहीं होनी चाहिए। (<https://www.eicindia.gov.in/...> से 8 मई 2018 को ली गई)। यदि क्लैम मांस में ई. कोली की संख्या इस सीमा से अधिक हो जाती है, तो इसे यूरोपीय संघ के मानकों के अनुसार अवसाद और गर्मी उपचार के अधीन किया जाना चाहिए (डब्ल्यूएचओ, 2010)। चूंकि क्लैम को झीलों और वनस्पतियों से काटा जाता है, प्रदूषण के स्रोतों में क्लैम की कटाई वाले जल के प्रदूषण की जाँच करने की क्षमता सीमित है। विषाक्त पदार्थों के निर्माण की संभावित अवधियों के दौरान क्लैम की कटाई वाले पानी की आवधिक बंदता, प्रसंस्करण से पहले उचित निर्मलीकरण, कटाई से लेकर अंतिम खेप तक गुणवत्ता मानकों का पालन करने की आवश्यकता पर जागरूकता

आदि इस का मुकाबला करने के लिए सुझाए गए तरीके हैं (डब्ल्यूएचओ, 2010)।

केरल में, काला क्लैम (विल्लोरिता साईप्रिनोइड्स) मांस का मुख्य रूप से घरेलू रूप से विपणन किया जाता है। राज्य में अधिकांश प्रसंस्कृत क्लैम गाँवों से आती है, ज्यादातर अष्टमुडी और वेम्बनाड झीलों से। ये मछुआरियों द्वारा पास के थोक या खुदरा बाजारों में बेचे जाते हैं। मछुआरों द्वारा कच्चे क्लैम को उबालकर हाथ से इसका छिलका निकालकर प्रसंस्कृत किया जाता है, जो आमतौर पर एक गृहस्थी आधारित गतिविधि है (गोपाल ईटी. अल., 2014)। वर्तमान में पैदावार क्लैम को एल्यूमीनियम के कंटेनरों में उबाला जाता है और लोहे की जालीदार छलनी का उपयोग करके मांस को अलग किया जाता है। विपणन तक मांस को एल्यूमीनियम के कंटेनरों में संभरण किया जाता है और मछुआरिन क्लैम के प्रसंस्करण गतिविधियों के लिए 8 घंटे तक उपयोग करते हैं।

इस प्रक्रिया में शामिल लोग धुएं और अन्य बीमारियों के संपर्क में आने के कारण श्वसन संबंधी समस्याओं के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं। उत्पादक विनिर्माण प्रथाओं में ज्ञान का स्तर और मूल्यवर्धन बहुत कम है। मत्स्यन शेल की आपूर्ति के माध्यम से चूने के उद्योग का समर्थन करता है जो मांस के अलग होने के बाद के एक उप-उत्पाद है।

भले ही अधिकांश मांस का स्थानीय स्तर पर विपणन किया जाता है, लेकिन वर्ष 2015 से राज्य के क्लैम को कर्नाटक और अन्य पड़ोसी राज्यों में बाजार मिलना शुरू हो गया है। केरल में उनके पकड़ की तुलना में, इन नए बाजारों में क्लैम मांस बेहतर दाम हासिल कर रहा है (सीएमएफआरआई, 2016)। केरल में क्लैम शेल के व्यापार को बढ़ावा देने के लिए क्लैम सहकारी समितियाँ भी आगे आयी हैं (सुजा और मोहम्मद, 2011)।

आईसीएआर-सीआईएफटी द्वारा हस्तक्षेप

घरेलू और निर्यात बाजार में क्लैम की संभावनाएं गुणवत्ता मानकों को बनाए रखने के लिए मछुआरों के बीच जागरूकता को सीधे तौर पर जोड़ रही हैं। एक बार क्लैम का प्रसंस्करण उन क्षेत्रों में जहाँ इसका बड़े पैमाने पर उपज होता है और प्रसंस्कृत मांस की गुणवत्ता को स्वीकृत मानकों के अनुसार सुनिश्चित किया जाता है, तो उद्योग की संभावनाओं में काफी सुधार होगा। स्रोत पर ही प्रसंस्करण और पैकेजिंग में स्वच्छता के बारे में मछुआरों को जागरूक किया जाना चाहिए।

वेम्बनाड झील में मत्स्यन करने वाले आठ गाँवों के मछुआरे क्लाम मत्स्यन, प्रसंस्करण और विपणन में सक्रिय रूप से शामिल हैं। पेरंबलम एक ऐसा गाँव है, जो वेम्बनाड झील में स्थित एक द्वीप है। पेरंबलम द्वीप में लगभग 250 परिवार क्लैम मत्स्यन में लगे हुए हैं (गोपाल ईटी, अल., 2014)

संकेंद्रित क्षेत्र

और इसलिए आईसीएआर-सीआईएफटी, कोचीन द्वारा क्लैम मछुआरों को एकत्र करने और फसलोत्तर कलाम के प्रसंस्करण के लिए एक सुविधा बनाने हेतु एक परियोजना के कार्यान्वयन के लिए एक आदर्श स्थान के रूप में इसकी पहचान की गई। यह भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (विज्ञान के लिए इक्विटी समर्थन एवं विकास (सीड) कार्यक्रम द्वारा वित्त पोषित एक परियोजना के तहत किया गया था। संस्थान द्वारा उपयुक्त प्रोटोकॉल और प्रौद्योगिकी आदानों को विकसित किया गया, जिसमें क्लाम माँस का निर्मलीकरण और प्रसंस्करण और पैकेजिंग सहित फसलोत्तर प्रौद्योगिकी का मानकीकरण भी शामिल हैं।

मछुआरा समूह

पेरंबलम गांव के क्लैम फिशर्स (महिला और पुरुष) को ग्रूपों में बाँटा गया और ग्रूप के सदस्यों को क्लैम माँस के स्वच्छंद व्यवहार प्रथाओं, प्रसंस्करण और मूल्य वर्धित उत्पादों की वैज्ञानिक तरीकों के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। लगभग 90 क्लैम मछुआरों को अच्छा विनिर्माण आचरण (जीएमपी) पर व्यक्तिगत प्रशिक्षण दिया गया। पेरंबलम में निर्मलीकरण इकाई के साथ एक केंद्रीकृत क्लैम प्रसंस्करण सुविधा और व्यावहारिक पकाने और उबालने की इकाई स्थापित की जाएगी। यह प्रसंस्करण सुविधा वेम्बनाड झील के अन्य क्लैम प्रसंस्करण गाँवों के लिए एल नमूने के रूप में कार्य करेंगे।

प्रक्रियाओं का मानकीकरण

प्रसंस्करण संयंत्र में एक दिन में लगभग 1 मीट्रिक टन कच्चे माल की प्रसंस्करण हेतु आवश्यकताओं को पूरा करने लायक पूर्ण रूप से सुसज्जित निर्मलीकरण प्रणाली होगी। पकाने के समय को 10 मिनट प्रति बैच में मानकीकृत किया गया है (प्रत्येक बैच 100 किलोग्राम कच्चे, निर्मलीकृत क्लैम को संभाल सकता है)। इंडस्ट्रियल कुकिंग और उबालने की उद्देश्य से बनाई गई इकाई को पूर्ण क्लैम को उबलते इकाई में उत्पन्न भाप में पकाने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। उबलते हुए चैंबर 40 मिनट के लिए लगभग 7 किलोग्राम के प्रारंभिक जलती हुई बायोमास के साथ लगातार भाप का उत्पादन कर सकते हैं। पकाने की इकाई में दो कक्ष शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक एक समय में 5 ट्रे में 50 किलोग्राम क्लैम को समायोजित कर सकता है। क्लैम माँस का स्थानीय रूप से या निर्यात के लिए या वैकल्पिक रूप से मूल्यवर्धित उत्पादों की तैयारी के लिए उपयोग करने के उद्देश्य से यूनिट में अल्पावधि भंडारण के लिए एक शीत कक्ष भी दिया गया है। क्लैम माँस मूल्यवर्धन के लिए उचित है और इस परियोजना के माध्यम से सात उत्पादों को आजमाया गया, जिसमें लोकप्रिय रैडि (खाने के लिए तैयार) -टू-ईट उत्पाद जैसे कटलेट, रोल, बॉल्स, समोसा आदि के साथ-साथ क्लैम अचार शामिल हैं, जिन्हें छोटे पैमाने पर

उद्यमियों के बीच लोकप्रिय बनाया जा सकता है।

छिलके से माँस का हाथ से पृथक्करण समय और प्रयास ज्यादा लेती है जिस हाथ से संचालित रोटरी माँस और छिलका विभाजक जैसे बेहतर डिजाइन में ढाल कर घटाया गया है। क्लैम के मैनुअल हैंडलिंग को कम होने के कारण माँस के सूक्ष्मजीव संदूषण की संभावना को भी कम करता है। यूनिट की घूमने की गति माँस को शेल से अलग करती है और माँस ड्रम के तल पर स्थापित की गई उथले स्टील की ट्रे में एकत्र किया जाता है और मशीन के एक छोर पर छिलके अलग से एकत्र होता है।

नई विपणन नीतियाँ

प्रसंस्कृत माँस का विपणन अक्सर बाजार आयोग के एजेंटों द्वारा उपयुक्त प्रसंस्करण और पैकेजिंग के बिना किया जाता है, जिसकी वजह से भारत के मौजूदा परिस्थितियों में निर्माता को उपार्जित विपणन लाभ कम मिलता है। यदि उत्पाद को उचित ब्रांडिंग के बाद और सीधे उपभोक्ता को उपयुक्त गुणवत्ता विनिर्देश के साथ विपणन किया जाता है, तो उत्पाद की बाजार स्वीकार्यता में सुधार होंगे। यदि बेहतर गुणवत्ता तथा निर्मलीकरण द्वारा स्वादिष्ट और स्वच्छ परिस्थितियों में प्रसंस्करण सुनिश्चित करेंगे तो उपभोक्ता क्लैम माँस खरीदने के लिए तैयार होंगे। इसके साथ ही, जलकृषि फार्मा के चयन में सावधानी बरतते हैं, उसी तरह क्लैम कृषि को बढ़ावा देना भी आवश्यक है क्योंकि यह पैदावार क्षेत्रों से प्रदूषण से मुक्त क्लैम संसाधनों की उपलब्धता में सुधार करता है।

निष्कर्ष

भारत जैसे देशों से क्लैम व्यापार की भविष्य की संभावनाओं के लिए उपभोक्ता के लिए सुरक्षित अच्छी गुणवत्तावाले उत्पाद तैयार करने के लिए फसल-पूर्व और फसलोत्तर प्रथाओं को बेहतर बनाने में सहायता की आवश्यकता है। गुणवत्ता मानकों के अनुपालनार्थ पणधारियों, प्रसंस्करण उद्योग और सक्षम नियामक प्राधिकरण के बीच मजबूत संपर्क होना चाहिए। बेहतर गुणवत्ता घरेलू बाजार में क्लैम मीट के पारिश्रमिक को बढ़ाएगी आर अनुवर्ती रूप से निर्यात बाजार में भी वृद्धि होगी।

References

1. CMFRI, K. (2016). CMFRI Annual Report 2016-2017.p.103
2. Gopal, N., Jeyanthi, P., & Chandrasekar, V. (2014). Production and marketing of the black clam (Villorita cyprinoides) in Perumbalam Island, Alappuzha District, Kerala. Indian Journal of Fisheries, 61(4)
3. [https://www.eicindia.gov.in/knowledge-repository/legals/BM/Notification_no_S.O.668\(E\)_dated_10th_June_2003.pdf](https://www.eicindia.gov.in/knowledge-repository/legals/BM/Notification_no_S.O.668(E)_dated_10th_June_2003.pdf)
4. Mohamed, K S and Kripa, V and Asokan, P K and Sasikumar, Geetha and Venkatesan, V and Jenni, B and Alloysious, P S and Chinnadurai, S and Ragesh, N and Prema, D (2016)Development of bivalve farming as a source of income generation for women's self-help groups in coastal India. In: Sustainable intensification of aquaculture in the Asia-Pacific region. Documentation of successful practices. Food and Agriculture Organization of the United Nations, Thailand, pp. 82-92. ISBN 978-92-5-109065-7
5. Pawiro, S. (2010). Bivalves: global production and trade trends. Safe management of shellfish and harvest waters, 11-19.
6. Rees, G., Pond, K., Kay, D., Bartram, J., Santo Domingo, J., & World Health Organization. (2010). Safe management of shellfish and harvest waters: minimizing health risks from sewage-contaminated shellfish
7. Suja, N., & Mohamed, K. S. (2011). Role of co-operative societies in black clam fishery and trade in Vembanad Lake. Marine Fisheries Information Service, (207), 6-8
8. WHO (2010) Safe Management of Shellfish and Harvest Waters (Eds. G. Rees, K. Pond, D. Kay, J. Bartram and J. Santo Domingo), ISBN: 9781843392255, IWA Publishing, London, UK.

मई 2018 के दौरान भारत के चयनित बंदरगाहों में समुद्री मत्स्यों की लैंडिंग की प्रमुख विशेषताएँ

संतोष कदम, वी.वी. अफ़सल, एन. जे. नीतु और जोइस वी. तोमस
नेटफिश-एमपीईडीए

प्रस्तावना

नेटफिश एमपीईडीए के पकड़ प्रमाणपत्र योजना के एक हिस्से के रूप में भारत के प्रमुख बंदरगाह पर होने वाली समुद्री मत्स्य लैंडिंग और नाव आगमन पर जानकारी एकत्र करता रहा है। मई 2018 की मत्स्य लैंडिंग और नाव आगमन डेटा का विश्लेषण परिणाम इस रिपोर्ट में प्रस्तुत किया है।

डेटा संग्रह और विश्लेषण

देश भर में चयनित प्रमुख लैंडिंग केन्द्रों पर तैनात बंदरगाह आंकड़ा संग्राहक (तालिका 1 देखें) प्राथमिक और माध्यमिक दोनों स्रोतों से मत्स्य पकड़ और नाव आगमन की सूचना दैनिक आधार पर देते हैं।

बंदरगाह पर एक दिन में अवतरित किया गया विभिन्न मत्स्य प्रजातियों की अनुमानित मात्रा को स्पॉट अनुमान के आधार पर प्राप्त किया गया था। बंदरगाह पर मत्स्यन यानों का नाम, पंजीकरण संख्या और प्रकार भी दर्ज किए गए। प्रजाति-वार, क्षेत्र-वार, राज्य-वार और बन्दरगाह-वार अनुमानों तक पहुंचने के लिए ऑनलाइन अनुप्रयोगों और एमएस ऑफिस (एक्सेल) टूल्स का उपयोग करके इन आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। इस अवधि के दौरान पूर्वी तट के साथ प्रचलित ट्रोल्लिंग प्रतिबंध के कारण भारत के पूर्वी तट के बंदरगाहों को इस विश्लेषण के लिए नहीं लिया।

तालिका 1. आंकड़ा संग्रह के लिए चयनित बंदरगाह और लैंडिंग केंद्रों की सूची

क्रम सं.	राज्य	मत्स्यन बन्दरगाह
1	केरल	बेप्पोर
2		पुतियाप्पा
3		तोप्पुंण्डी
4		मुनंबम
5		शक्तिकुलंगारा
6		तोट्टुप्पल्ली
7		कायमकुलम
8		विषिन्जम

9	कर्नाटक	मंगलोर
10		माल्पे
11		गंगोली
12		तट्टी
13		कारवार
14		होत्रावर
15	महाराष्ट्र	हर्णे
16		न्यू फेरी वार्फ
17		रत्नागिरी (मिरकरवाडा)
18		ससून डॉक
19	गुजरात	वेरावल
20		पोरबंदर
21		मंग्रोल
22	गोआ	कटबोना
23		मालिम
24	तमिल नाडु	कोलच्चल

मत्स्य लैंडिंग पर मूल्यांकन

मई 2018 के दौरान 24 लैंडिंग केन्द्रों से मात्रा में कुल 32,153.82 टन मत्स्य पकड़ आंकड़ा प्राप्त हुआ। कुल पकड़ में 13,330.59 टन (41%) पेलाजिक फिनफिश, 11,185.97 टन (35%) डेमर्सल फिनफिश और 7,637.26 टन (24%) शेलफिश शामिल हैं, जिससे पेलाजिक फिनफिश ने अधिकतम मात्रा में योगदान किया (चित्र 1)।

कुल पकड़ में 91 प्रकार के समुद्री मत्स्य आइटम शामिल थे, जिनमें से कालानुक्रमिक क्रम में उच्च योगदान देने वाले हैं, जापानीस त्रेड फिन ब्रीम, इंडियन मैकेरेल, स्विड, रिबन फिश और लिज़ार्ड फिश (चित्र 2) इन 5 मत्स्यन मदों ने कुलमिलकर कुल पकड़ का 50% का योगदान किया। अन्य प्रमुख मत्स्य मद हॉर्स मैकेरेल और इंडियन स्कैड थे, जिनमें से प्रत्येक ने कुल लैंडिंग का 1000 टन से अधिक का योगदान दिया। भारतीय साल्मन, जिसने 0.10 टन की

संकेंद्रित क्षेत्र

मात्रा दर्ज की, जिसने महीने के दौरान के सबसे कम लैंडिंग दर्ज की थी।

मई 2018 के दौरान दर्ज किए गए विभिन्न मत्स्य वस्तुओं की मात्रा को तालिका 2 में श्रेणी-वार दिया गया है। इंडियन मैकेरल, रिबन फिश और स्कैड्स पेलजिक फिनफिश किस्में थीं, जिसने सर्वाधिक लैंडिंग दर्ज की जबकि डिमर्सल फिनफिश के मामले में प्रमुख योगदानकर्ता जापानी थ्रेड फिन ब्रीम और लिज़ार्ड फिश थे।

मोलस्कन स्टॉक में ज्यादातर स्क्वड, कटलफिश, ऑक्टोपस और वेल्क शामिल हैं, जिसने लगभग 62% शेल लैंडिंग दर्ज किया और बाकी 38% क्रस्टेशियंस थे। क्रस्टेशियंस में मुख्य रूप से पीनिड श्रिम्प चिंराट शामिल थे।

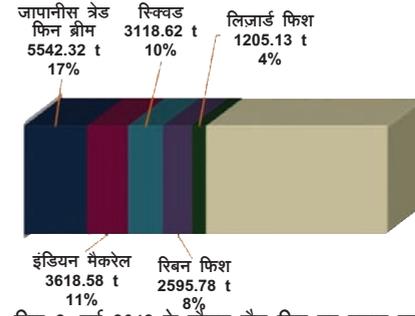
शेलफिश 7637.26 t 24%

डेमर्सल फिनफिश 11185.97 t 35%

पेलाजिक फिनफिश 13330.59 t 41%

कुल पकड़ 32153.82 t

चित्र 1. मई 2018 के दौरान की गई श्रेणी-वार मत्स्य लैंडिंग



चित्र 2. मई 2018 के दौरान लैंड किए गए प्रमुख मत्स्यन मत्स्य

तालिका 2. मई 2018 के दौरान विभिन्न मत्स्यन मत्स्य की श्रेणी-वार लैंडिंग

मत्स्यन मत्स्य	मात्रा टनों में	कुल पकड़ की प्रतिशतता
पेलाजिक फिनफिश		
इंडियन मैकेरल	3618.583	11.25
रिबन फिश	2595.781	8.07
स्काड्स	1926.800	5.99
ट्यूना	1201.933	3.74
हॉर्स मैकेरल	1084.328	3.37
इंडियन ऑइल सारडीन	751.965	2.34
एंचोवीस	452.371	1.41
ट्रेवल्ली	383.580	1.19
बारक्यूडा	244.660	0.76
लेथर जैकट	232.707	0.72
सीर फिश	154.320	0.48
डोलफिन फिश	140.856	0.44
लेस्सर सारडीन	124.787	0.39
ओरियंटल बोनिटो	106.000	0.33
सेल फिश	80.600	0.25
बॉम्बे डक	36.527	0.11
मारलिन्स	34.575	0.11
क्वीन फिश	29.090	0.09

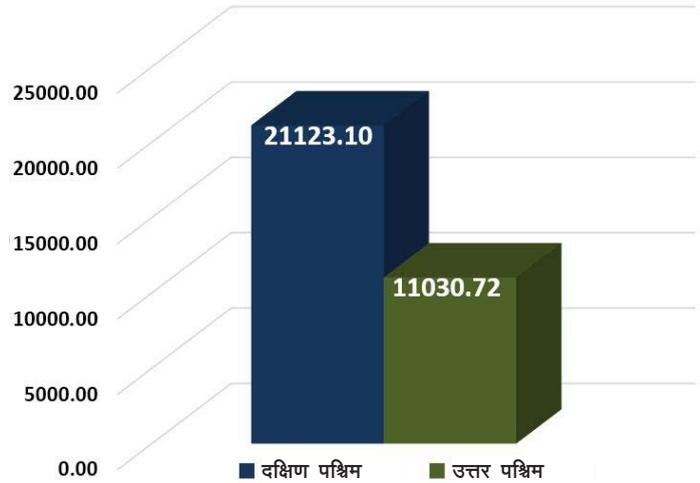
कोबिया	28.640	0.09
मुल्लेट	25.300	0.08
इंडियन थ्रेड फिश	18.650	0.06
हेरिंग्स	16.825	0.05
नीडिल फिश	15.668	0.05
हिल्सा	15.604	0.05
फ्लॉट नीडिल फिश	7.235	0.02
इंडियन इलिशा	3.100	0.01
इंडियन साल्मन	0.100	0.00
कुल	13330.585	41.46
डेमर्सल फिनफिश		
जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम	5542.317	0.17
लिज़ार्ड फिश	1205.133	0.04
क्रोकर	856.226	0.03
बुल्स आई	778.148	0.02
मून फिश	721.849	0.02
सोल फिश	674.414	0.02
कैट फिश	401.278	0.01
स्नैपर	343.050	0.01
रीफ कोड	278.283	0.01
पॉफ्रेंट	104.488	0.00

संकेंद्रित क्षेत्र

पोणी फिश	89.835	0.00
ईल	73.715	0.00
गोट फिश	56.500	0.00
रे	42.650	0.00
एम्परर ब्रीम	6.500	0.00
इंडियन हालिबट	3.845	0.00
लॉन्ग स्पाइन् सी ब्रीम	2.700	0.00
ब्लैक टिप शार्क	1.300	0.00
ग्लास्सी पेर्च	1.250	0.00
फ्राइलफिश	1.200	0.00
टाइगर पेर्च	0.889	0.00
पैरट फिश	0.400	0.00
कुल	11185.970	0.35
शेल फिश		
क्रस्टेशियन्स		
पीनिड थ्रिम्प	2326.815	7.24
गैर पीनिड थ्रिम्प	206.585	0.64
समुद्री केकड़ा	376.545	1.17
कीचड़ केकड़ा	1.580	0.00
लॉबस्टर	2.335	0.01
कुल मोलस्क	2913.860	9.06
मोलस्क		
स्क्वड	3118.622	9.70
कट्टलफिश	877.524	2.73
ऑक्टोपस	577.258	1.80
व्हेल्क	150.000	0.47
कुल मोलस्क	4723.404	14.69
कुल शेलफिश	7637.264	23.75
कुल योग	32153.819	100.00

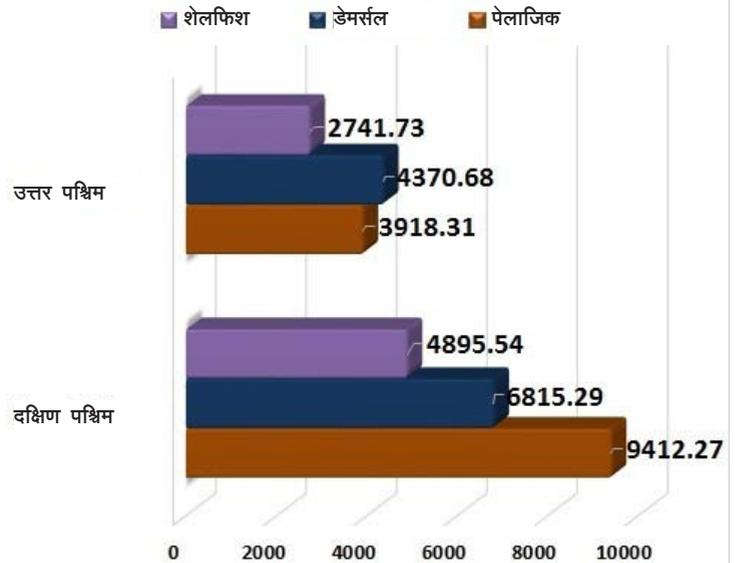
क्षेत्र-वार लैंडिंग

दक्षिण पश्चिम तट, जिसमें केरल, कर्नाटक, गोवा और तमिलनाडु के कोलच्चल सहित 16 चयनित बंदरगाह शामिल हैं, जहाँ महीने के दौरान 22,123.10 टन (चित्र 3) कुल पकड़ का 66% दर्ज किया गया। इसके बाद उत्तर पश्चिम तट जिसमें महाराष्ट्र और गुजरात में 7 चयनित लैंडिंग स्थान शामिल हैं, जहाँ से 11,030.72 टन (34%) का मत्स्य संसाधन लैंड किया गया।



चित्र 3. मई 2018 के दौरान दर्ज की गई क्षेत्र-वार लैंडिंग

दक्षिण पश्चिम क्षेत्र के लैंडिंग में पेल्लिक फिनफिश का प्रभुत्व था जबकि उत्तर पश्चिम में डेमर्सल फिनफिश संसाधनों (चित्र 4) के लैंडिंग का वर्चस्व था।



चित्र 4. प्रत्येक क्षेत्र की कुल लैंडिंग के लिए श्रेणी-वार योगदान (टन में) की तुलना

प्रत्येक क्षेत्र के लैंडिंग में प्रमुख योगदान दिए गए पाँच प्रमुख मत्स्यन मर्दें तालिका 3 में दी गई है।

संकेंद्रित क्षेत्र

तालिका 3. मई 2018 के दौरान प्रत्येक क्षेत्र में अवतरित प्रमुख मद्दें

मद	मात्रा टनों में	क्षेत्र की कुल लैंडिंग %
दक्षिण पश्चिम		
जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम	3186.51	15.09
इंडियन मैकरेल	2950.76	13.97
स्क्वड	2038.53	9.65
रिबन फिश	1035.10	4.90
इंडिया स्काड	1017.89	4.82
उत्तर पश्चिम		
जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम	2355.81	21.36
रिबन फिश	1560.68	14.15
स्क्वड	1077.79	9.77
हॉर्स मैकरेल	716.64	6.50
क्रोकर	676.24	6.13

की गई। 5,910.44 टन (18%) की कुल लैंडिंग के साथ महाराष्ट्र तीसरे स्थान पर रहा।



राज्यवार लैंडिंग

मई 2018 के दौरान कर्नाटक ने 11,151.65 टन की अधिकतम समुद्री मत्स्य लैंडिंग दर्ज की, जो कुल पकड़ की 35% थी। (चित्र-5) उसके बाद का स्थान केरल का था, जहाँ से 7,045.01 टन (22%) की मत्स्य लैंडिंग रिपोर्ट

चित्र 5. मई 2018 के दौरान किए राज्य-वार मत्स्य लैंडिंग (टनों में)

मई के दौरान प्रत्येक राज्य में लैंडिंग में महत्वपूर्ण योगदान दिए गए प्रमुख पांच मत्स्यन मद का विवरण तालिका 4 में दिए गए हैं।

तालिका 4. मई 2018 के दौरान विभिन्न राज्यों में लैंड किए गए प्रमुख मद

मद	मात्रा टनों में	राज्य की कुल अवतरण %
केरल		
इंडियन मैकरेल	684.56	9.72
इंडियन ऑइल सारडीन	653.68	9.28
लयांग स्काड	543.00	7.71
जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम	516.20	7.33
स्क्वड	482.42	6.85
कर्नाटक		
जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम	2436.56	21.85
इंडियन मैकरेल	1534.71	13.76
स्क्वड	1301.25	11.67
रिबन फिश	892.20	8.00
लिज़ार्ड फिश	797.70	7.15

संकेंद्रित क्षेत्र

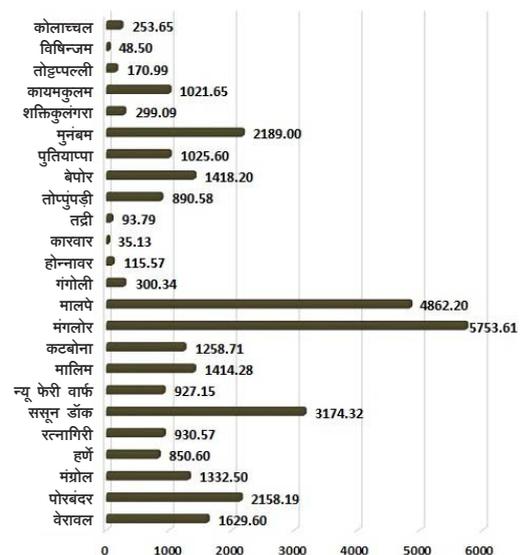
गोआ		
इंडियन मैकरेल	731.50	27.37
मून फिश	523.30	19.58
स्क्वड	254.86	9.54
जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम	233.75	8.75
ट्यूना	152.50	5.71
महाराष्ट्र		
जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम	2076.41	35.13
हॉर्स मैकरेल	715.94	12.11
स्क्वड	415.99	7.04
ब्राउन श्रिम्प	313.79	5.31
रिबन फिश	309.18	5.23
गुजरात		
रिबन फिश	1251.50	24.44
स्क्वड	661.80	12.93
इंडियन मैकरेल	463.40	9.05
क्रोकर	416.50	8.13
कट्टलफिश	310.40	6.06
तमिल नाडु		
ट्यूना	138.50	54.60
इंडियन गोट फिश	39.50	15.57
लिज़ार्ड फिश	30.50	12.02
इंडियन स्काड	17.50	6.90
कट्टलफिश	13.70	5.40

बन्दरगाह-वार लैंडिंग

चित्र 6 महीने के दौरान भारत के पश्चिमी तट के चयनित बंदरगाहों पर दर्ज की गई मत्स्य लैंडिंग का प्रतिनिधित्व करता है। 24 बंदरगाहों में से, मैंगलोर बंदरगाह ने 5,753.61 टन (18%) की सर्वोच्च लैंडिंग दर्ज की। और इसके बाद 4,862.20 टन (15%) के योगदान के साथ मालपे बंदरगाह था। 3,174.32 टन (10%) की मात्रा के साथ ससून डॉक बंदरगाह और 2,189.00 टन (7%) की मात्रा के साथ मुनंबम बंदरगाह बाद के पदों पर रहा। सबसे कम लैंडिंग (35.13 टन) कारवार बंदरगाह से दर्ज की गई।

नाव आगमन पर मूल्यनिर्धारण

मई 2018 के दौरान कुल 15,538 नाव आगमन दर्ज की गई, जिनमें से वेरावल बंदरगाह में सर्वोच्च संख्या (सं. 2429) में नाव आगमन दर्ज की गई।



चित्र 6. मई 2018 के दौरान पश्चिम तटीय बंदरगाहों पर किए गए लैंडिंग (टनों में)

संकेंद्रित क्षेत्र

1876 नाव के आगमन के साथ मैंगलोर बंदरगाह अगले स्थान पर रहा। इस अवधि के दौरान 24 बंदरगाह में से केवल 5 ने 1000 से अधिक नाव आगमन दर्ज किए, जिसका विवरण तालिका 5 में दिया गया है। 65% मत्स्यन यानों ने अपनी पकड़ का लैंडिंग ट्रॉलर्स की श्रेणी के बंदरगाहों पर किया गया और शेष लैंडिंग पर्स सीनर्स, रिंग सीनर्स, गिल नेटर्स, लॉन्ग लाइनर्स और ट्रेडिशनल क्राफ्ट्स ने किया।

तालिका 5. मई 2018 के दौरान > 1000 नाव लैंडिंग दर्ज किए गए मत्स्यन बन्दरगाह

क्रम संख्या	मत्स्यन बन्दरगाह	राज्य	नाव आगमनों की संख्या
1	वेरावल	गुजरात	2429
2	मंगलोर	कर्नाटक	1876
3	पोरबंदर	गुजरात	1732
4	मंग्रोल	गुजरात	1268
5	हर्णे	महाराष्ट्र	1055

तुलनात्मक विश्लेषण

तालिका 6 पिछले महीनों के साथ मई 2018 के आंकड़ों की तुलना प्रस्तुत करती है। अप्रैल की तुलना में मई के दौरान कुल मत्स्य पकड़ में 20,000 टन की अधिक कमी आई। पिछले महीने की तुलना में प्रतिशत में शेरर में 2% की वृद्धि के साथ पेलिजिक फिनफिश शीर्ष योगदानकर्ता के रूप में जारी रही।

डेमेर्सल फिनफिश संसाधनों की हिस्सा प्रतिशत में भी 2%

की वृद्धि आई और इस कारण मई के दौरान शेल फिश लैंडिंग का हिस्सा प्रतिशत में 4% की कमी आई। जापानी थ्रेड फिन ब्रीम, विभिन्न मत्स्यन मर्दों के बीच 17% हिस्सेदारी के साथ सर्वोच्च योगदानकर्ता के रूप में दर्ज किया गया स्क्वड दूसरे स्थान पर रहा। इस अवधि के दौरान कर्नाटक ने सर्वोच्च लैंडिंग दर्ज किया और केरल को दूसरे स्थान पर रखा गया।

बंदरगाहों में, मंगलोर बंदरगाह ने सर्वोच्च स्थान हासिल किया जबकि बेयपोर बंदरगाह सातवें स्थान पर आ गया। दर्ज की गई नाव की कुल संख्या से अप्रैल की तुलना में मई में 6000 से अधिक नाव कम हो गई।

संक्षेप

मई 2018 में, भारत के 24 प्रमुख मत्स्य बंदरगाहों से 32,153.82 टन की समुद्री मत्स्यन संसाधनों की कुल लैंडिंग दर्ज की गई, जिसमें पेलिजिक फिनफिश ने डेमर्सल फिनफिश और शेलफिश स्टॉक की तुलना में अधिक मात्रा में योगदान दिया। मद-वार मत्स्यन लैंडिंग को ध्यान में रखते हुए, महीने के दौरान जापानी थ्रेड फिन ब्रीम प्रमुख योगदानकर्ता था। दक्षिण पश्चिम तट ने कुल पकड़ के 66% से अधिक लैंडिंग दर्ज किया और सबसे अधिक पकड़ कर्नाटक ने दर्ज किया।

चयनित 24 बंदरगाहों में से 12 बंदरगाह में 1000 टन से अधिक मत्स्य लैंडिंग दर्ज की गई और मैंगलोर बंदरगाह ने सबसे अधिक लैंडिंग दर्ज की। नाव आगमन के संदर्भ में, वेरावल बंदरगाह ने अधिकतम नाव आगमन दर्ज किया।

तालिका 6. आँकड़े का तुलनात्मक विश्लेषण

	मार्च 2018	अप्रैल 2018	मई 2018
कुल पकड़	62,203.72 टन	52,184.40 टन	32,153.82 टन
पेलिजिक फिनफिश का लैंडिंग	24,254.18 टन (39%)	20,374.36 टन (39%)	13,330.59 टन (41%)
डेमेर्सल फिनफिश का लैंडिंग	20,134.22 टन (32%)	17,128.26 टन (33%)	11,185.97 टन (35%)
शेलफिश का लैंडिंग	17,815.32 टन (29%)	14,681.78 टन (28%)	7,637.26 टन (24%)
सर्वोच्च लैंडिंग दर्ज की गई प्रजाति	स्क्वड (9%)	स्क्वड (10%)	जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम (17%)
सर्वोच्च लैंडिंग दर्ज किया गया राज्य	गुजरात (28%)	केरल (30%)	कर्नाटक (35%)
सर्वोच्च लैंडिंग दर्ज किया गया बन्दरगाह	बेपोर (18%)	बेपोर (21%)	मंगलोर (18%)
कुल नाव आगमन	27,512	21,677	15,538

*कुल पकड़ प्रतिशत



‘स्क्वायर मेष कोड एंड निर्माण’ पर प्रशिक्षण



सीआईएफटी के वैज्ञानिक स्क्वेयर मेष के फायदों के बारे में बताते हैं

ट्रावल नेट या इच्छानुरूप पकड़ से किशोर मत्स्यों का बड़े पैमाने पर विनाश समुद्र से समुद्री मत्स्यों के तेज़ गिरावट के प्रमुख कारणों में से एक माना जाता है। चूंकि ट्रावल नेट एक गैर-चयनात्मक मत्स्यन गियर होने के कारण किशोरों को पूरी तरह से पकड़ से बचना मुश्किल है।

लेकिन मत्स्यन जाल में कुछ संशोधन करके विशेष रूप से कॉड एंड में, किशोरों की पकड़ प्रतिशत को काफी कम किया जा सकता है।

ट्रावल नेट में डायमंड मेश कॉड एंड के बजाय स्क्वायर मेष कॉड एंड का उपयोग किशोरों की पकड़ को कम करने के लिए एक सफल उपाय के रूप में साबित हुआ है। अतः समुद्री संसाधनों के संरक्षण के उद्देश्य से, नेटफिश ने नियमित जागरूकता कक्षाओं और प्रशिक्षणों के माध्यम से मछुआरों के बीच स्क्वेयर मेष कॉड एंड के उपयोग को लोकप्रिय बना रही है।

सीआईएफटी के तकनीकी सहायता के साथ प्रमुख बंदरगाह पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में मछुआरे, मुख्य रूप से नेट निर्माता ने सीआईएफटी के स्क्वेयर मेष कोड एंड निर्माण प्रौद्योगिकी कार्यक्रम में भाग लिया।

सीआईएफटी, वेरावल के अधिकारियों के समन्वय के साथ क्रमशः 22 और 24 मई को वेरावल और पोरबंदर में दो व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों के द्वारा नाव मालिकों, नाव कप्तानों, और नेट निर्माण कर्मियों सहित 61 मछुआरे प्रशिक्षित किए गए।

सीआईएफटी के अधिकारियों ने प्रतिभागियों को प्रस्तुतियों के माध्यम से मत्स्यन में उपयोग किए जाने वाले जाल के विभिन्न प्रकार और पैटर्न और किशोर मत्स्यों के निकास में स्क्वेयर मेष कोड एंड के गुणों के बारे में बताया।

नेटफिश के राज्य समन्वयक श्री जिग्नेश विसावडिया ने मछुआरों से कहा कि समुद्री संसाधनों के संरक्षण के लिए ट्रावल नेट में स्क्वायर मेष कॉड एंड का उपयोग करना अति आवश्यक है। सिद्धांत सत्र के बाद, सभी प्रतिभागियों को डायमंड मेश नेट को स्क्वायर मेष कॉड एंड में बदलने की तकनीक का भी प्रदर्शन किया गया। बाद में, प्रशिक्षणार्थियों को अलग-अलग समूहों में विभाजित किया गया और प्रत्येक समूह को स्वयं स्क्वायर कॉड एंड तैयार करने के लिए बनाया गया। बी ए यादव शिक्षा और ग्रामीण विकास फाउंडेशन



सीआईएफटी के वैज्ञानिक स्क्वेयर मेष के फायदों के बारे में बताते हैं

ट्रस्ट (बीएवाईआईआरडीएफटी), नेटफिश के गैर सरकारी संगठन सदस्य के अध्यक्ष ने इन कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक संचालित करने की प्रेरणा दी।

‘मछुआरों के लिए समुद्र में सुरक्षा’ पर जागरूकता कार्यक्रम



सीआईएफएनईटी के संकायों के साथ प्रशिक्षणार्थी

समुद्र में मछुआरों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और समुद्र में आपदाओं के लिए तटीय समुदायों को अधिक समुत्थानशील बनाने के लिए नेटफिश ने, मछुआरों के लिए जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ किया। “समुद्री सुरक्षा और नौपरिवहन” पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक मई 31 को नीलपुर, पुरबा मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल में आयोजित किया गया। इसमें उस इलाके के मशीनीकृत मत्स्यन यानों के 39 कप्तानों/चालकों ने भाग लिया।

श्री अतनु रे, राज्य समन्वयक, नेटफिश ने समुद्र में रक्षा और

सुरक्षा, मत्स्यन यानों के पंजीकरण और लाइसेंसिंग के महत्व, लाइफ जैकेट, लाइफबॉय, लाइफ राफ्ट, संकट चेतावनी ट्रांसमीटर (डीएटी) मशीन आदि वीएचएफ, एचएफ और एमएफ ट्रान्समिशन प्रणाली, जैसे विभिन्न जीवन रक्षक उपकरणों का उपयोग, संकट के दौरान विभिन्न संचार उपाय आदि के बारे में विस्तृत विवरण दिया।

उन्होंने प्रतिभागियों को ‘रोड के नियम’ और समुद्र में सुरक्षित नौपरिवहन के लिए विभिन्न प्रकार के दिन के संकेतों और रात के संकेतों के बारे में भी बताया। प्रतिभागियों को



पश्चिम बंगाल में नेटफिश द्वारा समुद्री सुरक्षा कार्यक्रम

आवश्यक प्रशिक्षण सामग्री भी प्रदान की गई। यह कार्यक्रम प्रशिक्षुओं के लिए फायदेमंद साबित हुआ, क्योंकि ये जागरूकता न केवल सुरक्षित मत्स्यन के लिए ही नहीं बल्कि नावों के सुरक्षित नौपरिवहन के लिए भी बहुत आवश्यक है। प्रशिक्षण में भाग लिए कप्तानों ने कार्यक्रम के आयोजन में नेटफिश द्वारा किए गए प्रयास की सराहना की।

मई की शुरुआत में, नेटफिश कर्मी जिसमें मुख्य कार्यकारी, राज्य समन्वयक और अनुसंधान सहायक शामिल थे, ने सिफनेट, कोच्ची में “समुद्री सुरक्षा, नौपरिवहन और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के उपयोग” पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। सत्र का उद्देश्य ‘समुद्र में सुरक्षा और सुरक्षित नौपरिवहन’ पर ज्ञान बढ़ाना और इस विषय पर नई जानकारी एकत्र करना था।

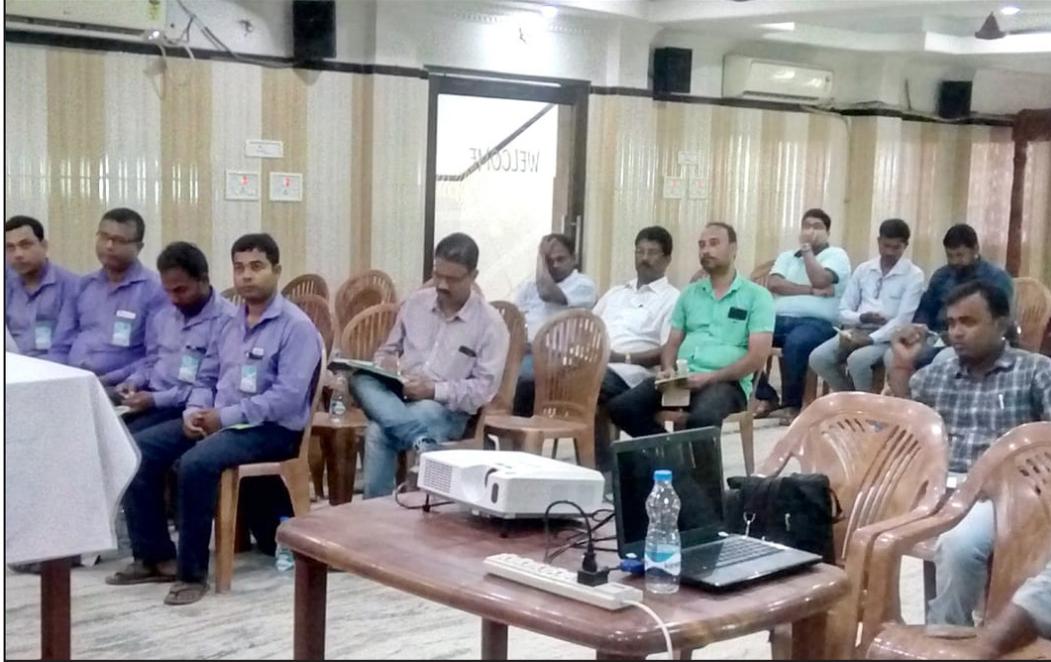
दिनांक 7 और 8 मई को आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम

में समुद्री संचार प्रणाली, नौवहन उपकरण, समुद्री संकेत, सड़क और समुद्री सुरक्षा उपकरणों के नियम शामिल थे। प्रशिक्षण में कुछ समुद्री इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और जीवन रक्षा उपकरण का भी प्रदर्शन किया गया।

बाद में, प्रशिक्षणार्थियों को सिफनेट पोत - प्रशिक्षणी की यात्रा के लिए ले जाया गया, जहाँ पोत के कप्तान ने जहाज में उपलब्ध विभिन्न नौवहन सुविधाओं के कार्यप्रणाली के बारे में बताया। छात्रों को वास्तविक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए सिफनेट पर स्थापित किया गया अनुकरण प्रणाली का दौरा करने का अवसर भी प्रशिक्षणार्थियों को मिला। प्रशिक्षण ने इस विषय पर बहुत अच्छा प्रदर्शन प्रदान किया गया और मछुआरों के लिए समुद्री सुरक्षा प्रशिक्षण को निष्पादित करने के लिए नेटफिश टीम को आत्मनिर्भरता से सुसज्जित किया।



जलकृषि फार्म नामांकन पर पणधारी बैठक



कोर्टई, पश्चिम बंगाल में पणधारी बैठक प्रगति पर

दिनांक 22 जून को कोर्टई, पश्चिम बंगाल के वैज्ञानिक जलकृषि केंद्र, में पणधारियों के लिए निर्यात माल के लिए अनिवार्य अनुमार्गणीयता की आवश्यकताओं और एमपीईडीए द्वारा प्रारंभ किया गया नामांकन कार्यक्रम के बारे में उनको सचेत करने के लिए एक बैठक का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 50 से अधिक लोगों ने भाग लिया।

ईयू निर्यात के लिए पीएचटी के साथ-साथ अनुमार्गणीयता अनिवार्य आवश्यकताओं में से एक है। हाल ही में, अनुमार्गणीयता देश से निर्यात की सुरक्षा के लिए परम आवश्यकता बन गई है। विशेष रूप से श्रिम्प को यूएसए के लिए निर्यात में एसआईएमपी के तहत शामिल किया गया है।

श्री अर्चिमान लाहिड़ी, उप निदेशक, एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया और जलकृषि उद्योग की वर्तमान समस्याओं के बारे में बताया। डॉ. देबाशीष रॉय, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, उप क्षेत्रीय प्रभाग, कोर्टई; श्री रामकृष्ण सरदार, सहायक निदेशक, मात्स्यिकी विभाग, पूर्व मेदिनीपुर जिला; और श्री जॉनसन, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता ने समर्थन दिया।

बाद में, श्री अर्चिमान लाहिड़ी ने वैश्विक स्तर पर श्रिम्प की कीमतों पर आयी गिरावट के कारणों के बारे में बताया। उन्होंने जलकृषि उत्पादों की अनुमार्गणीयता के बारे में भी बताया। उन्होंने एमपीईडीए द्वारा शुरू किए गए जलकृषि फार्मों के

नामांकन की एक विस्तृत योजना के बारे में विवरण दिया। उन्होंने आयातक देशों द्वारा जलकृषि उत्पादों में प्रतिजैविकियों पता लगाने के कारण कंटेनरों की अस्वीकृति के बारे में भी बताया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से सक्रिय और बड़े पैमाने पर भागीदारी द्वारा नामांकन अभियान को बड़ी सफलता बनाने का आग्रह किया। उन्होंने सभा को जलकृषि नामांकन कार्ड के नमूने को भी प्रदर्शित किया।

प्रस्तुतियों के बाद प्रतिभागियों द्वारा सक्रिय चर्चा भी की गई।



श्री अर्चिमान लाहिड़ी, उप निदेशक, एमपीईडीए, क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता पणधारियों को नामांकन कार्यक्रम स्पष्ट करते हुए



श्रिम्प कृषि को बेहतर बनाने के उद्देश्य से एमपीईडीए का विस्तार



चेन्नई के नीलांकरै में एक्यूएफ के चरण IV के लिए आधार शीला स्थापन समारोह

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) आयातित पेसिफिक व्हाइट श्रिम्प (एल.वन्नामी) के लिए अपनी जलीय संगरोध सुविधा (एक्यूएफ) का विस्तार करने के लिए तैयार है। यह कदम देश में प्रति वर्ष 3 से 3.5 लाख मीट्रिक टन तक श्रिम्प कृषि उत्पादन और समुद्री खाद्य निर्यात से उच्च राजस्व उत्पन्न की उम्मीद को बढ़ाते हैं।

श्री तरुण श्रीधर, सचिव, पशुपालन, डेयरी और मात्स्यिकी विभाग, भारत सरकार, ने दिनांक 13 जून को चेन्नई के नीलांकरै में एक्यूएफ के चरण IV के लिए आधारशिला डाली गई।

एक्यूएफ के चरण - IV, जिसे एमपीईडीए के अनुसंधान एवं विकास शाखा, राजीव गाँधी जलकृषि केंद्र (आरजीसीए) द्वारा स्थापित किया जाएगा, जिसमें छह क्यूबिकल, तीन रिसीविंग

क्षेत्र और एक धूमन कक्ष सहित पैकिंग क्षेत्र होंगे। इसकी अतिरिक्त क्षमता प्रति वर्ष 1,23,750 बूडर को संगरोध करने में मदद करेगी।

एल. वन्नामी, जिन्हें व्हाइट लेग श्रिम्प या किंग प्रोन के नाम से भी जाना जाता है, यूएस, यूरोप और अन्य वैश्विक बाजार में व्यापक रूप से मांगी जानेवाली एक विदेशी प्रजाति है। इसके बूड स्टॉक मुख्य रूप से यूएसए से आयात किए जाते हैं और भारत में इस गैर-देशी प्रजाति की शुरुआत के एक विनियमित मोड की सुविधा के लिए वर्ष 2009 में नीलांकरै में एक्यूएफ की स्थापना की गई थी।

श्री तरुण श्रीधर ने कहा कि भारत में जलकृषि को प्राथमिकता और बढ़ावा देने हेतु कृषि मंत्रालय ने एक्यूएफ को “नील क्रांति” के एक भाग के रूप में निधि प्रदान की है। उन्होंने कहा कि यह गुजरात, ओडिशा, महाराष्ट्र और केरल

जलकृषि परिदृश्य

जैसे अन्य संभावित राज्यों में एल वनामि की कृषि में मदद करेगा।

उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि भारत से समुद्री खाद्य के उत्पादन और निर्यात में पर्याप्त वृद्धि हासिल करने हेतु एमपीईडीए और आरजीसीए को सभी आवश्यक सहायता दी जाएगी।

डॉ. ए. जयतिलक, आईएएस, अध्यक्ष, एमपीईडीए, एवं अध्यक्ष आरजीसीए, ने कहा कि एक्यूएफ ने अब तक 11 लाख से अधिक एल. वनामी ब्रूड स्टॉकों का सफलतापूर्वक संगरोध किया है, और उसकी अतिरिक्त क्षमता उद्योग और श्रिम्य निर्यात को काफी मजबूत करेगा।

उन्होंने कहा कि भारत से समुद्री निर्यात 1.27 मिलियन टन के रिकॉर्ड परिमाण के साथ 6 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक उच्च स्तर पर छूने की उम्मीद है।

उन्होंने यह भी कहा कि एक्यूएफ विस्तार जैसे एक्वाकल्चर में नई पहल वर्ष 2022 तक समुद्री निर्यात से 10 बिलियन अमेरिकी डॉलर के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण होगा। डॉ. के. गोपाल, आईएएस, प्रधान सचिव, पशुपालन, डेयरी एवं मात्स्यिकी विभाग, तमिलनाडु सरकार ने राज्य से एक्यूएफ को सम्पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया।



जलकृषि फार्मों में प्रतिबंधित प्रतिजैविकी के उपयोग पर जागरूकता अभियान

एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग, कारवार ने दिनांक 28 जून को उत्तर कन्नड़ जिला, कारवार तालुक के मक्केरी और सुल्तानपुर में जलकृषि फार्मों में प्रतिबंधित प्रतिजैविकियों के उपयोग के बारे में कृषक समुदाय के बीच जागरूकता का प्रचार करने के उद्देश्य से दो दिवसीय अभियानों का आयोजन किया।

श्री जी. रामर, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एमपीईडीए क्षेत्रीय प्रभाग, कारवार ने भारत सरकार के पशुपालन, डेयरी और मात्स्यिकी विभाग द्वारा अधिसूचित प्रतिबंधित प्रतिजैविकियों की सूची प्रस्तुत की। दूसरे देश में निर्यात करते वक्त इन दवाओं के उपयोग से क्या प्रभाव पड़ सकता है, इसके बारे में उन्होंने बताया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि किसी विशेष उत्पाद, जैसे कि फ्रीड

बाइंडर, प्रोबायोटिक्स, पानी की गुणवत्ता बढ़ाने वाले, प्रतिरक्षा-उत्तेजक, फ्रीड और स्वास्थ्य बूस्टर जो एक्वाकल्चर उपयोग के लिए बाजार में उपलब्ध हैं, में ऐसी प्रतिजैविकियों का पहचान कैसे करें।

श्री एस एम शिरोडकर, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, ने तालाब स्तर पर आयोजित किए जाने वाले इन कार्यक्रमों के महत्व और आवश्यकता के बारे में समझाया। उन्होंने पशुओं के स्वास्थ्य एवं उपभोक्ताओं पर ऐसी दवाओं के बुरी प्रभाव के बारे में बताया।

कार्यशाला में पूर्वान्ध में मकेरी गांव के और अपराह्न में सुल्तानपुर गांव के क्रमशः 15 और 14 सक्रिय किसान / उद्यमियों ने भाग लिया।



कृष्णा जिले में आयोजित जागरूकता अभियान



श्री बी नरसिंहा राव, सहायक निदेशक, एमपीईडीए द्वारा नामांकन कार्ड वितरित करते हुए

जलकृषि में प्रतिजैविकियों के उपयोग की जाँच करने के लिए एक और प्रयास के रूप में, एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाडा ने दिनांक 16 मई को कृष्णा जिले के नागयालंका मंडल के बावदेवरपल्ली गांव में एक कार्यशाला का आयोजन किया। बैठक में पचास कृषकों ने भाग लिया।

अभियान का उद्घाटन करते हुए, एमपीटीसी (मंडल परिषद प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्र) के श्री बंधदा गणपति राव ने प्रतिजैविकी अवशेषों से संबंधित मुद्दों पर बात की और श्रिम्प कृषि में बेहतर प्रबंधन प्रथाओं में नवीनतम विकास और बीमारियों से लड़ने के लिए जैव सुरक्षा विधियों पर किसानों को आगाह किया।

श्री बी. नरसिंहा राव, सहायक निदेशक, एमपीईडीए ने श्रिम्प कृषि में प्रतिजैविकियों के उपयोग के जोखिमों के बारे में बताया और कृषकों को जलकृषि के लिए उपलब्ध वैकल्पिक प्रजातियों जैसे कि सीबास, मैंग्रोव केकड़े के बारे में भी समझाया।

समाज के अध्यक्ष श्री नायडू ननचैराया ने एमपीईडीए से अक्वा फार्म क्षेत्र में उनकी पैदावार श्रिम्प सामग्री रखने के लिए एक शीत कक्ष स्थापित करने के लिए अनुरोध किया। इस क्षेत्र में लगभग हजारों एकड़ में श्रिम्प कृषि कर रहे हैं और इससे कृषकों को उचित दर मिलते समय अपनी सामग्री बेचने में मदद मिलेगी।

श्री राजेश, फील्ड प्रबन्धक, नाक्सा ने नाक्सा के गतिविधियों और श्रिम्प जलकृषि में समाजों के गठन के महत्व के बारे में बताया।

बातचीत सत्र के दौरान, कृषकों ने बताया कि आपातकालीन पैदावार के दौरान, निर्यातक सिंडिकेट बना कर मूल्य में भारी कमी कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप भारी नुकसान हो रहा है। ऐसे अवसरों पर, इसे तोड़ना भी मुश्किल हो रहा है। किसानों ने एमपीईडीए अधिकारियों से न्यूनतम गारंटी मूल्य तय करने की व्यवस्था करने के लिए निर्यातकों के साथ बातचीत करने का अनुरोध किया। उपस्थित अधिकारियों ने किसानों को समझाया कि बाजार में कीमतों का निर्धारण आपूर्ति और मांग के आधार पर किया जाता है।

कृषक संपर्क सत्र के बाद, अक्वा किसानों को प्रतिजैविकी ब्रोशर और दिशानिर्देश पुस्तिका के साथ अक्वा फार्म नामांकन कार्ड वितरित किया गया।



एमपीईडीए के सहायक निदेशक श्री. बी. नरसिंहा राव द्वारा व्याख्यान दिया गया

एमपीईडीए द्वारा बहु-प्रजाति जलकृषि कॉम्प्लेक्स का प्रारंभ

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) देश में मत्स्य उत्पादन में क्रांति लाने के उद्देश्य से, यहां वल्लारपाडम में अपनी विशाल बहु-प्रजाति जलकृषि कॉम्प्लेक्स को प्रारंभ करने के लिए तैयार है।

8.5 एकड़ में फैले इस सुविधा से उच्च निर्यात मांग वाले 6-7 व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण प्रजातियों के बीज/फिंगरलिंग्स का उत्पादन होगा। प्रजातियों में टाइगर श्रिम्प, एशियाई सीबास, पोम्पानो, कोबिया, आनुवंशिक रूप से उन्नत फार्मड तिलापिया (गिफ्ट), कीचड़ केकड़ा आदि शामिल हैं।

एमपीईडीए के अध्यक्ष, ए जयतिलक ने कहा कि सुविधा की एक अनूठी विशेषता इसकी टाइगर श्रिम्प हैचरी होगी जिसकी उत्पादन क्षमता प्रति वर्ष 20 मिलियन रोग-मुक्त उच्च स्वास्थ्य बीज है।

“यह प्रयास दो दशकों के अंतराल के बाद ब्लैक टाइगर श्रिम्प कृषि को पुनर्जीवित करेगा और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में विशेष रूप से जापान और यूरोपीय संघ में अच्छी गुणवत्ता वाले टाइगर श्रिम्प की मांग और कीमत बहुत अधिक है, इससे निश्चित रूप से भारी रिटर्न मिलेंगे”, उन्होंने कहा।

ब्लैक टाइगर श्रिम्प कृषि के प्रमुख बाधाओं में से एक स्वस्थ, रोगमुक्त बीजों की कमी है। कोच्ची की यह सुविधा एक

मॉडल के रूप में काम करते हुए देश के अन्य हिस्सों में समान सुविधाएं स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त करेगी।

ब्लैक टाइगर श्रिम्प धान की खेती के ऑफ सीजन के दौरान केरल की पारंपरिक कृषि प्रणाली, जिसका नाम है ‘पोकली पडाशेखरम्स’, में कृषि करने के लिए सबसे अच्छी प्रजाति है। जयतिलक ने कहा कि हैचरी में एसपीएफ ब्रूडस्टॉक का उपयोग करके ‘पी मोनोडोन’ के रोग-मुक्त बीज का उत्पादन अविलंब होगा।

हैचरी को एक परिवर्तनात्मक रूप में डिज़ाइन किया गया है, जैसे कि माँग के आधार पर, सुविधा का उपयोग अन्य मीठे जल/सीबास, कोबिया, पोम्पानो, ग्रॉपर, स्कैम्पी, गिफ्ट आदि जैसे समुद्री फिनफिश या शेलफिश के बीज उत्पादन के लिए किया जा सकता है।

इस पूरे जैव-सुरक्षित हैचरी में जलाशय, जल निस्पंदन इकाई, माइक्रोआल्गे प्रयोगशाला, आर्टीमिया अनुभाग, परिपक्वता अनुभाग, लार्वा पालन और लार्वोत्तर पालन इकाई और बहिस्त्राव अभिक्रिया प्रणाली आदि सभी आवश्यक सुविधाएं हैं।

रोग मुक्त जंगली ब्रूडस्टॉक को इकट्ठा करने के लिए एक संगरोध इकाई जल्द ही स्थापित की जाएगी।

-www.business-standard.com



Handbook on Aquafarming: Breeding, Seed Production and Farming of Mud Crab

ORDER YOUR COPY!

Breeding, Seed Production and Farming of Mud Crab

₹50

THE MARINE PRODUCTS EXPORT DEVELOPMENT AUTHORITY (Ministry of Commerce & Industry, Government of India)
Head Office, MPEDA House, Building No: 27/1162, PB No:4272, Panampilly Avenue, Panampilly Nagar PO, KOCHI-682 036

मात्स्यकी अधिकारियों के लिए ईआईसी और सिबा द्वारा संयुक्त कौशल वृद्धि कार्यक्रम

वर्ष 2016-17 के दौरान विकास प्रक्षेपवक्र रखते हुए, आयात करने वाले देशों द्वारा कठोर खाद्य सुरक्षा मानकों को पूरा करते हुए, और सेनेटरी और फाइटोसैनिट्री (एसपीएस) पारिस्थितिक तंत्र के साथ रखते हुए मत्स्यन उत्पादों से भारतीय निर्यात से आय 37,871 करोड़ रुपए (5.7 बिलियन अमरीकी डॉलर) के सर्वोच्च स्तर पर पहुंच गया। मूल्य के संदर्भ में 25,000 करोड़ रुपए के कुल निर्यात में 70% का योगदान के साथ कृषित श्रिम्प हमारे निर्यात के प्रमुख मद बना है।

सिबा चेन्नई में चिरस्थाई निर्यात अवसरों के लिए समुद्री क्षेत्र (एसईएमएस) में कौशल वृद्धि: राज्य और केन्द्र शासित प्रदेशों के मात्स्यकी विभाग द्वारा बढ़ाया गया आधिकारिक नियंत्रण पर एक पाँच दिवसीय 'प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण' पाठ्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और पुडुचेरी राज्यों के 16 मात्स्यकी अधिकारियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को प्रमुख आयात राष्ट्रों द्वारा लागू प्राथमिक उत्पादन श्रृंखला, प्रसंस्करण केंद्रों और मानकों में गुणवत्ता आवश्यकताओं पर प्रशिक्षित किया गया।



सिबा-ईआईसी प्रशिक्षण के दौरान मैनूअल का विमोचन

इसलिए, यह आवश्यक है कि हमारे श्रिम्प कृषकों को गुणवत्ता वाले श्रिम्प के उत्पादन को सक्षम बनाने के लिए कृषि के बेहतर प्रबंधन प्रथाओं (बीएमपी) को अपनाने पर शिक्षित करना है। मात्स्यकी राज्य का विषय है, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मात्स्यकी विभागों को क्षमता विकास के कार्य में प्रमुख जिम्मेदारी है। इस संदर्भ में, निर्यात निरीक्षण परिषद (ईआईसी), भारत सरकार, आईसीएआर-सिबा के समन्वयन में, दिनांक 7 से 11 मई, 2018 को आईसीएआर-

पदार्थों का उन्मूलन घरेलू और निर्यात बाजारों में हमारे जलकृषि उत्पादों की उच्च स्वीकार्यता सुनिश्चित करेंगे। उन्होंने खारा पानी उत्पादन प्रणालियों में बीएमपी का अनुपालन करने और मत्स्यन विस्तार अधिकारियों के कौशल को बढ़ाने में ईआईसी के साथ हाथ मिलाने के लिए सिबा के प्रयासों की प्रशंसा की। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. पी. के. पाटिल, प्रधान वैज्ञानिक, सिबा और डॉ. जे.एस. रेड्डी, संयुक्त निदेशक, ईआईसी- ईआईए चेन्नई द्वारा किया गया।

आईसीएआर-सीआईएफटी द्वारा समुद्री खाद्य वितरण और खुदरा आउटलेट पर टेबल टॉप फिश डिस्कलिंग मशीन का तकनीकी समर्थन और प्रक्षेपण

आईसीएआर - केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोच्चिन ने मत्स्य शल्क को आसानी से हटाने के लिए एक मोटर संचालित टेबल टॉप फिश डिस्कलिंग मशीन (5 किलो क्षमता) विकसित की है। यह मशीन समुद्र से लेकर मीठे पानी तक के प्रजातियाँ जैसे सार्डिन, तिलापिया, रोहू आदि जैसे लगभग सभी आकार के प्रजातियों / मत्स्यों से शल्क निकाल सकती है। मशीन को स्टेनलेस स्टील (एसएस) वर्ग ट्यूब से बनाया है और घूर्णन ड्रम को खाद्य ग्रेड स्टील (एसएस 304) के साथ निर्मित किया गया है। इसमें 20-30 आरपीएम की आवश्यक ड्रम गति प्राप्त करने के लिए उचित बेल्ट रिडक्शन मैकेनिज्म के साथ 0.5 एचपी एसी मोटर भी है। डिस्कलिंग मशीन की कुल लागत जीएसटी को छोड़कर लगभग 35,000 रुपये है, जो छोटे पैमाने के और खुदरा मत्स्य प्रसंस्कारक / बेचने वालों / विक्रेताओं के लिए सस्ती है। दिनांक 11 जून, 2018 को आईसीएआर-सीआईएफटी द्वारा समुद्री खाद्य वितरण



डॉ. रविशंकर सी. एन. निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफटी द्वारा समुद्री खाद्य वितरण और खुदरा आउटलेट का उद्घाटन करते हुए

और खुदरा आउटलेट, द टाउन हार्बर, मैडोम जंक्शन, इडपल्ली, कोचीन में टेबल टॉप डिस्कलिंग मशीन प्रारंभ की गई। इसके अलावा, आईसीएआर-सीआईएफटी ने समुद्री खाद्य प्रसंस्करण और पैकेजिंग के लिए तकनीकी सहायता प्रदान की। डॉ. जॉर्ज नैनान, प्रभारी एबीआई, आईसीएआर-सीआईएफटी और अन्य कर्मचारियों की उपस्थिति में डॉ. रविशंकर सी. एन., निदेशक द्वारा समुद्री खाद्य वितरण और खुदरा आउटलेट का औपचारिक रूप से उद्घाटन किया गया।

- सीआईएफटी

सभी प्रजातियों के शार्क फिन के निर्यात पर प्रतिबंध अधिसूचना के लिए केरल के उच्च न्यायालय द्वारा केंद्रीय सरकार को समर्थन

केरल के उच्च न्यायालय ने शार्क फिन के निर्यात पर प्रतिबंध लगाने वाली केंद्र सरकार की अधिसूचना को बरकरार रखा और यह अनुमान लगाया कि नगण्य उपभोक्ताओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए शार्क की 'थोक हत्या' नहीं हो सकती है।

तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश एंटनी डोमिनिक की अध्यक्षता वाली एक डिविशन बेंच ने सिंगल बेंच के आदेश को बरकरार रखा, शार्क की सभी प्रजातियों के पंखों के निर्यात पर लगायी गई रोक

को केंद्र सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा जारी 2015 की अधिसूचना के खिलाफ चुनौती को बरखास्त कर दिया। भारत में शार्क को एक लुप्तप्राय पशु के रूप में मानते हुए इसके सभी प्रजातियों को पकड़ने पर प्रतिबंध, पहली बार 2001 में शुरू किया गया था और व्यापक विरोध के कारण, खासकर मछुआरा समुदायों से, बाद में उसी वर्ष इसे वापस लिया गया। इसे वर्ष 2015 में फिर से लगाया गया था, किसी भी प्रजातियों के सभी शार्क फिन के निर्यात पर प्रतिबंध लगाया गया।

समाचार स्पेक्ट्रम

मरीन फिन्स, एक समुद्री उत्पादक निर्यातक ने प्रतिबंध को चुनौती दी कि यह व्यापार अपने मौलिक अधिकार को प्रभावित करता है क्योंकि यह प्रतिबंध लगाने के कारण स्थानीय बाजार में मछुआरों से शार्क फिन खरीद नहीं सकता है। न्यायमूर्ति ए मुहम्मद मुस्ताक ने रिट याचिका को बरखास्त कर दिया, यह देखते हुए कि इसमें नीति-निर्माण के बुद्धिमत्ता को चुनौती देने की गुंजाइश नहीं है और केंद्र सरकार ने पूर्ण प्रतिबंध को लागू करने से पहले संबंधित कारकों को ध्यान में रखा है।

अधिसूचना को बरखास्त करते हुए, न्यायमूर्ति दमा शेषाद्रि नाइडू ने अपने निर्णय में कहा: “स्वीकृत, भारत में किसी भी स्तर पर, एक नरसंहार अनुपात में शार्क फिनिंग या शार्क को मारने में शामिल नहीं हुआ है। लेकिन पर्यावरण संरक्षण, वनस्पतियों और जीवों का संरक्षण और पारिस्थितिक संतुलन



की मांग के रखरखाव में शून्य सहिष्णुता की मांग है।”

यह आगे देखा गया: “हम यह नहीं कह सकते कि सरकार उन लोगों की मांगों के प्रति असंवेदनशील है जो मत्स्यन पर भरोसा रखते हैं। न ही इसने कोई अलार्मवादी तरीका अपनाया है। सबसे पहले, सरकार ने दिनांक 11.7.2001 को एक अधिसूचना द्वारा कुल प्रतिबंध लगाया; बाद में इसे संशोधित किया गया: संशोधित अधिसूचना, दिनांकित 05.12.2001। शार्क और रे की केवल नौ प्रजातियों के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। 13 वर्षों के अंतराल के बाद, सरकार ने पूर्ण प्रतिबंध एक बार फिर से पेश किया। प्रजनन पर प्रतिबंध के कारण स्पष्ट हैं। गहरी सागर में मछुआरे के लिए शार्क या रे की प्रजाति को एक दूसरे से पहचानना असंभव है।

अदालत ने आगे कहा कि अधिसूचना में घरेलू खपत के लिए शार्क के शिकार पर प्रतिबंध नहीं है, हालांकि शार्क फिन के निर्यात पर प्रतिबंध लगाया है। यह सुझाव था: “शार्क का मांस, हमें स्वीकार करना चाहिए, भारतीयों के लिए यह मुख्य भोजन नहीं है। मत्स्य उपभोक्ताओं के बीच भी, जो लोग शार्क मांस पसंद करते हैं वे माइनसक्यूल होते हैं। इसलिए, ऐसे नगण्य उपभोक्ताओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए, शार्क की थोक हत्या नहीं हो सकती। फिन लेना अपराध होता है, और लगभग इसका परिणाम प्रजातियों का विरल या गायब होने की सीमा तक है।

- www.livelaw.in



आईसीएआर-सीआईबीए ने नवसारी कृषि विश्वविद्यालय परिसर में गुजरात के पश्चिमी तट पर अपने प्रथम जलकृषि अनुसंधान केंद्र का उद्घाटन किया

आईसीएआर-सिबा ने नवसारी कृषि विश्वविद्यालय (एनएयू) परिसर, नवसारी में अपने नवसारी-गुजरात अनुसंधान केंद्र (एनजीआरसी) का उद्घाटन दिनांक 7 जून, 2018 को श्री आर सी पटेल, विधान सभा सदस्य, नवसारी, डॉ. सी. जे. उंगरिया, कुलपति, एनएयू और डॉ. एन.के. विजयन, निदेशक, आईसीएआर-सीआईबीए, चेन्नई की उपस्थिति में डॉ. जे.के. जेना, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी), आईसीएआर द्वारा किया गया।

श्री आर.सी. पटेल, विधान सभा के सदस्य, नवसारी ने अपनी अध्यक्षीय टिप्पणी में, नवसारी में सिबा के केंद्र स्थापित करने पर प्रसन्नता व्यक्त की और गुणवत्ता बीज, लागत प्रभावी और गुणवत्ता चारा और गुजरात के झींगा पालन क्षेत्र के लिए रोग प्रबंधन उत्पाद आदि के लिए प्रौद्योगिकियों को लाने हेतु सिबा की मदद मांगी, ताकि उत्पादन लागत कम हो सके। उन्होंने जलकृषि को कृषि का दर्जा देने हेतु राज्य सरकार

से सिफारिश करने के लिए आईसीएआर से अनुरोध किया ताकि कृषि कृषि के लिए उपलब्ध लाभ मत्स्य कृषकों को भी प्राप्त हो सकें। उन्होंने क्षेत्र के कृषकों से एनएयू परिसर में स्थापित सिबा केंद्र से अधिकतम लाभ उठाने का आग्रह किया।

डॉ. जे.के. जेना, उपमहानिदेशक (मात्स्यिकी) ने अपने उद्घाटन भाषण में नवसारी कृषि विश्वविद्यालय परिसर में एनआरजीसी की आयोजन के लिए कुलपति और एनएयू के सभी अधिकारियों को धन्यवाद दिया। जलकृषि वह क्षेत्र है जो वित्तीय एवं पोषण सुरक्षा के साथ खाद्य सुरक्षा और नौकरी के अवसर भी देता है। खारे पानी के जलकृषि का लाभ यह है कि यह जल संसाधन पीने या कृषि जल से प्रतिस्पर्धा नहीं कर रहा है।

आईसीएआर जलकृषि क्षेत्र के विकास में संगठनों के बीच तालमेल बनाने पर काम कर रहा है और कृषकों के साथ

There's no
seafood as

Irresistible as Indian Seafood

From the sparkling Indian seas comes the
finest seafood in the world. Enjoy it in
abundance throughout the year.

*You haven't tasted the best seafood,
if you haven't tasted Indian seafood.*



The Marine Products Export Development Authority

(Ministry of Commerce & Industry, Government of India)

MPEDA House, Panampilly Avenue, Kochi - 682 036, Kerala, India

Phone: +91 484 2311979 Fax: +91 484 2313361 E-mail: ho@mpeda.gov.in



एनजीआरसी दीप प्रज्वलित करते हुए

काम करने के लिए सिबा और एनएयू के वैज्ञानिकों से आग्रह किया ताकि 'सभी के लिए मत्स्य' का उद्देश्य प्राप्त हो सके। डॉ. सी. जे. डंगरिया, एनएयू के कुलपति ने जलकृषि कृषकों की जरूरतों को पूरा करने में सीआईबीए और एनएयू के साथ मिलकर काम करने के अवसरों को रेखांकित किया, किसानों के लाभ के लिए लागत प्रभावी तकनीकों का भी आह्वान किया।

पश्चिमी तट में सिबा केंद्र के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, डॉ. के. के. विजयन, निदेशक, सिबा ने स्पष्ट किया कि सिबा गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन, चारा प्रौद्योगिकी और जलीय पशु स्वास्थ्य पर निपुणता प्राप्त है और इस क्षेत्र में अक्वा

कृषकों को तकनीकी सहायता प्रदान करने में एनएयू और सिबा के मात्स्यिकी कॉलेज के बीच के साझेदारी के महत्व को रेखांकित किया।

उन्होंने कामना की कि सिबा के समर्थन के साथ गुजरात जलकृषि कृषकों के उद्यमी कौशल अपने जलकृषि उत्पादन और खारे पानी जलकृषि के प्रगतिशील विकास को दुगुना करते हुए गुजरात राज्य की क्षमता को साकार करने में योगदान देगा। उन्होंने कहा कि वर्ष 2017 के दौरान समुद्री खाद्य निर्यात में 37,000 करोड़ रुपये का घातीय वृद्धि मील का पत्थर है।

इस कार्यक्रम के दौरान, डॉ. सी. गोपाल, सदस्य सचिव, तटीय जलकृषि प्राधिकरण। भारत सरकार, चेन्नई, डॉ. प्रवीण पुत्रा, सहायक महानिदेशक (मात्स्यिकी), आईसीएआर और डॉ. एन.एच. केलावाला, डीन, पशुचिकित्सा कॉलेज ने अपना संबोधन भाषण दिया और नए स्थापित केंद्र के लिए समर्थन की पेशकश की। नवसारी कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से खारा पानी कृषकों की सहभागिता बैठक आयोजित की गई। क्षेत्र के चयनित किसानों को मिट्टी और जल स्वास्थ्य कार्ड वितरित किए गए।

इससे पहले डॉ. पी. के. पाटिल, प्रमुख वैज्ञानिक, आईसीएआर-सिबा, चेन्नई ने अतिथियों का स्वागत किया और श्री पंकज पाटिल, वैज्ञानिक, आईसीएआर-सिबाने धन्यवाद ज्ञापित किया।

- आईसीएआर-सिबा

वर्ष 2017 में वार्षिक समुद्री मत्स्य लैंडिंग 5.6 प्रतिशत तक बढ़ी



पिछले साल की तुलना में वर्ष 2017 में दर्ज की गई वार्षिक समुद्री मत्स्य लैंडिंग में 5.6 प्रतिशत वृद्धि के साथ भारत का समुद्री मत्स्य उत्पादन पुनरुद्धार का संकेत दिखाता है। केंद्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीएमएफआरआई) की एक विज्ञप्ति के अनुसार, वर्ष 2017 में भारत (अंडमान

और निकोबार और लक्षद्वीप द्वीपों को छोड़कर) में कुल समुद्री मत्स्य लैंडिंग 3.83 मिलियन टन की थी। 7.86 लाख टन का योगदान (कुल लैंडिंग का 20.5 प्रतिशत) गुजरात लगातार पांचवें साल शीर्ष स्थान पर रहा इसके बाद तमिलनाडु और केरल थे।

समाचार स्पेक्ट्रम

वर्ष 2012 में रिकॉर्ड ऊंचाई पर रहने के बाद यह सबसे उच्च पकड़ है।

तमिलनाडु के अलावा सभी समुद्री राज्यों में समुद्री मछली की लैंडिंग में सुधार हुआ और केंद्रशासित प्रदेशों पुडुचेरी और दमन और दीव में एक अस्थायी गिरावट आई।

इस बार पश्चिमी तटीय राज्यों में ऑइल सारडीन का पुनरुद्धार, खासकर केरल में देश के समुद्री मत्स्य उत्पादन को बेहतर बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई।

हालांकि, पूर्वी तट पर आंध्र प्रदेश में 83% की गिरावट और तमिलनाडु में 2016 की तुलना में 36 प्रतिशत गिरावट के साथ ऑइल सारडीन पकड़ में गिरावट देखी गई।

इस बार कुल 788 समुद्री मत्स्य प्रजातियां भारतीय तट पर उतरीं जिनमें अधिकतम संख्या तमिलनाडु तट में लैंड किया और इसके बाद केरल और महाराष्ट्र थे।

इंडियन ऑइल सार्डिन, जो पिछले कुछ सालों से घट रहा था, इस बार पूरे भारत में 38 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए 3.37 लाख टन (कुल लैंडिंग का 8.8 प्रतिशत) की लैंडिंग के साथ समुद्री मत्स्य संसाधनों की सूची में सबसे शीर्ष स्थान पर पहुँचा। केरल में एक अच्छी खबर के रूप में क्या आना चाहिए, 2016 में कैच की तुलना में राज्य में ऑइल सार्डिन की लैंडिंग में 176 प्रतिशत की भारी वृद्धि दर्ज की गई, जो पिछले दो दशकों में सबसे कम रिकॉर्ड था।

अखिल भारतीय स्तर पर, इंडियन मैकेरल की पकड़ भी बढ़ गई जबकि इस साल हिल्सा शाद, थ्रेडफिन ब्रीम और

ट्यूना की लैंडिंग में कमी आई। सीएमएफआरआई ने कहा कि पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, गोवा और महाराष्ट्र में मैकेरल की महत्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की गई।

2017 के अंत के दौरान हुए ओखी चक्रवात केरल और तमिलनाडु के समुद्री मत्स्य क्षेत्रों पर विनाशकारी प्रभाव डाला।

दिसंबर 2017 में ओखी आपदा के कारण दोनों राज्यों को लैंडिंग केंद्र स्तर पर अनुमानित 585 करोड़ रुपये और खुदरा स्तर में 821 करोड़ रुपये के आर्थिक नुकसान के साथ लगभग 35,000 टन मत्स्य की अनुमानित गिरावट का सामना करना पड़ा।

सीएमएफआरआई के निदेशक, ए गोपालकृष्णन के अनुसार, वर्तमान समुद्री मत्स्य पकड़ भारत में दूसरी ऐतिहासिक उच्चतम स्थान पर है।

उन्होंने कहा कि समुद्री मत्स्य उत्पादन में वृद्धि एक आशाजनक प्रवृत्ति है और यह देखा गया है कि कई समुद्री तटीय राज्यों में कुछ नए संसाधन प्रमुख मत्स्यन के रूप में उभर रहे हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि “लैंडिंग डेटा यह भी दर्शाता है कि सीएमएफआरआई द्वारा सुझाया गया न्यूनतम कानूनी आकार (एमएलएस) और अन्य नियामक उपाय जैसे हाल ही के मत्स्यन नियम उनके मत्स्यन को बेहतर बनाने के लिए केरल और अन्य समुद्री राज्यों की बहुत मदद की है।

- www.outlookindia.com



विश्लेषण: इक्वाडोरियन श्रिम्प निर्यात आगे बढ़ रहा है।

अप्रैल से इक्वाडोरियन श्रिम्प निर्यात के आंकड़ों को देखते हुए। आंकड़ा यह संकेत करता है कि 106 मिलियन पाउंड के परिमाण का निर्यात किया गया; जो दिसंबर 2017 में पहुंचे रिकॉर्ड पिछले रिकॉर्ड से 14 मिलियन पाउंड अधिक है।

एशिया में शिपमेंट भी एक साल पहले की तुलना में अप्रैल के 70 मिलियन पाउंड के स्तर को पार करते हुए रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गया, जो 25 मिलियन पाउंड से अधिक की वृद्धि है।

मार्च की तुलना में अप्रैल में अमेरिका के लिए लदान भी उच्च था, लेकिन अप्रैल 2017 की तुलना में केवल 3 मिलियन पाउंड की मामूली और नगण्य थी। साल-दर-साल के आधार पर, पिछले तीन वर्षों में यू.एस.को किए गए लदान वर्ष के पहले महीनों के दौरान 50 मिलियन पाउंड पर स्थिर रहा।

निष्कर्षतः एशिया में शिपमेंट में एकमात्र महत्वपूर्ण वृद्धि के साथ इक्वाडोर का निर्यात रिकॉर्ड-ऊंचाई पर जारी है।



- www.seafoodnews.com



PRAWN FEED



VANNAMEI FEED



BLACK TIGER SHRIMP FEED



BLACK TIGER SHRIMP FEED

AVANTI FEEDS LIMITED

In the business of quality Prawn feed and Prawn Exports
An ISO 9001: 2008 Certified Company

Aiding sustainability & reliability to Aquaculture



Shrimp Hatchery



Feed Plant - Gujarat



Prawn Feed & Fish Feed



Prawn Processing & Exports

INNOVATIVE - SCIENTIFICALLY FORMULATED - PROVEN

- GREATER APPETITE • HEALTHY & FASTER GROWTH
- LOW FCR WITH HIGHER RETURNS • FRIENDLY WATER QUALITY

AVANT AQUA HEALTH CARE PRODUCTS

AVANTI A.H.C.P. RANGE



IN COLLABORATION WITH:
THAI UNION FEEDMILL CO., LTD.,
Thailand.



Chelated Trace Mineral Supplement

Avant Bact
Aiding Sustainability & Reliability to Aquaculture

Gut Probiotic



Marine Mineral

Avant AmmoniAbsorb
AIDING SUSTAINABILITY & RELIABILITY TO AQUACULTURE

Ammonia Absorber

Avant D-Flow

Water Quality Improver

Avant Life

Oxy-Generator

Avant ProW
Aiding Sustainability & Reliability to Aquaculture

Soil & Water Probiotic

Avant Immupak
Aiding Sustainability & Reliability to Aquaculture

Immunity Enhancer

Avant Catcher 1
AIDING SUSTAINABILITY & RELIABILITY TO AQUACULTURE

Corporate Office: **Avanti Feeds Limited**

G-2, Concord Apartments 6-3-658, Somajiguda, Hyderabad - 500 082, India.
Ph: 040-2331 0260 / 61 Fax: 040-2331 1604. Web: www.avantifeeds.com

Regd. Office: **Avanti Feeds Limited.**

H.No.: 3, Plot No.: 3, Baymount, Rushikonda, Visakhapatnam - 530 045, Andhra Pradesh.



Innovative safeguards against complex risk

At Integro, we understand the risks involved with Seafood. We are committed to simple solutions to complex risks through our expertise.

Protect yourself with bespoke Rejection/Transit Insurance solutions from Integro Insurance Brokers.

Contact us to experience our expertise:

Raja Chandnani

Phone: +44 20 74446320

Email: Raja.Chandnani@integrogroupp.com

www.Integrouk.com

INTEGRO / UK
INSURANCE BROKERS